NOVEL & SHORT STORIES IN HINDI

STUDY MATERIAL

VI SEMESTER

CORE COURSE : HIN6 B13

For

BA HINDI

(2014 ADMISSION ONWARDS)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Calicut University P.O, Malappuram, Kerala, India 73635

182A

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL

VI SEMESTER

B A HINDI

(2014 ADMISSION ONWARDS)

CORE COURSE IN HINDI

HIN6 B13 : NOVEL & SHORT STORIES IN HINDI

Prepared by:

Dr. SAJILA. K
Asst. Professor of Hindi (on contract)
Dept. of Hindi, University of Calicut

Layout: 'H' Section, SDE
©
Reserved

विषय सूची

	CONTENT	PAGE NO.
Module -1	हिंदी कहानी का उद्भव और विकास	**5 – 11**
Module - 2	**HINDI SHORT STORIES**	**12 – 34**
Module-3	हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास	**35 – 41**
Module -4	ग्लोबल गाँव के देवता (रणेन्द्र)	**42 - 48**
MODEL QUESTIONS		**49 - 57**

MODULE - 1

हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास

कहानी जीवन की ऐसी प्रभावपूर्ण झलक है जो किसी एक के मार्मिक भाव या विचार के उद्‌घाटन द्वारा अपनी संपूर्ण एकात्मकता में पाठक को चमत्कृत कर देती है। प्रारंभ में कहानी अपनी मौखिक परंपरा में कुतूहल सृष्टि करती हुई बढती रहती थी, लेकिन उसमें किन्हीं कलात्मक गुणों की ओर लेखक का ध्यान नहीं रहता था।

हिंदी गद्य में कहानी शीर्षक से प्रकाशित होनेवाली सबसे पहली रचना 'रानी केतकी की कहानी' है जो 1803 ई में इंशा अल्ला खाँ के द्वारा लिखी गयी। अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार हिंदी में सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन काल से लेकर कहानियाँ लिखी जाने लगी। सन् 1900 में सरस्वती में किशोरीलाल गोस्वामी से लिखित इन्दुमती नामक कहानी प्रकाशित हुई। हिंदी के प्रथम कहानीकार के रूप में किशोरीलाल का नाम ही उल्लेखनीय है।

आधुनिक हिंदी कहानी का जन्म उपर्युक्त कहानियों के साथ हुआ, तो भी कहानी का वास्तविक विकास जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द के युग में हुआ। 1909 में प्रसादजी की प्रथम कहानी 'ग्राम' इंदू पत्रिका में प्रकाशित हुई। कुछ विद्वान इस कहानी को ही हिंदी की पहली श्रेष्ठ कहानी मानते हैं। छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल, बिसाती, स्वर्ग के खण्डहर आदि श्रेष्ठ कहानियाँ लिखकर प्रसादजी ने कहानी-क्षेत्र में विशेष प्रतिष्ठा पायी। उनकी कहानियों में भावों की प्रधानता और काव्यात्मक शैली का सौन्दर्य मिलता है। कुछ कहानियाँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है। प्रसादजी की कहानियाँ कहानी-कला की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं, उनमें नाटकीयता का सजीव वातावरण मिलता है। प्रसादजी की भावुकतामयी शैली लेकर राय कृष्णदास, चण्डीप्रसाद, हृदयेश, विनोद शंकर व्यास, गोविन्दवल्लभ पंत आदि लेखकों ने उनकी परंपरा को आगे बढाया।

कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द के आविर्भाव से एक नये युग का सूत्रपात हुआ। प्रेमचन्द बहुत पहले उर्दू में कहानियाँ लिख रहे थे। हिंदी में उनकी सर्वप्रथम कहानी 'पंचपरमेश्वर' सन् 1916 में प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द की उर्दू कहानियाँ 'सोजे वतन' नाम से संकलित और प्रकाशित हुई थीं। हिंदी में उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं। मानसरोवर के छः भागों में उनकी कहानियाँ

संगृहीत हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में भारत की साधारण जनता के जीवन की विभिन्न समस्याओं और संघर्षों का मार्मिक चित्रण मिलता है। सबसे पहले किसानों और मजदूरों के दु:खी जीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का श्रेय प्रेमचन्द को ही मिलता है। साधारण और सरल भाषा-शैली में प्रेमचन्द ने ऐसी कहानियाँ लिखी जो सोद्देश्य थीं। पूस की रात, कफन, बडे घर की बेटी, आत्माराम, पंच परमेश्वर, शतरंज के खिलाडी आदि उनकी श्रेष्ठ कहानियाँ है जो हिंदी के कहानी साहित्य में अमर हैं।

इस युग के अन्य कहानीकारों में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, श्री विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, श्री बदरीनाथ भट्ट, सुदर्शन, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, चतुरसेन शास्त्री , ज्वालादत्त शर्मा, गोविन्द वल्लभ पंत, राधिकारमण प्रसाद सिंह, रायकृष्णदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी,निराला आदि प्रसिद्ध है। 1915 में प्रकाशित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' में आदर्श प्रेम की संयमित किन्तु सुन्दर व्यंजना हुई है। यह हिंदी की श्रेष्ठतम कहानियों में एक है। हिंदी कहानी के प्रारंभिक युग में सामाजिक समस्याओं को ही प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। इस युग में एक ओर प्रेमचन्द, कौशिक आदि ने आदर्शोन्मुख कहानियाँ लिखीं, तो दूसरी ओर उग्रजी, चतुरसेन आदि ने भावुकताप्रधान रोमांटिक कहानियों की परंपरा शुरू की। शैली की दृष्टि से इस युग की कहानियाँ प्राय: सुगठित एवं संतुलित हैं।

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने माना है कि 1930 से लेकर हिंदी कहानियों का द्वितीय युग शुरू होता है। इस युग में कहानी की पुरानी परंपराएँ ज़ारी रहीं, साथ ही नयी नयी परंपराओं का उदय और विकास हुआ। इस युग में मुख्य रूप से मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण को मुख्य विषय मानकर कहानी लिखने की नयी परंपरा शुरू हुई। इसका श्रेय जैनेन्द्र कुमार को ही प्राप्त होता है। जैनेन्द्र की कहानियों में मानव मन की आन्तरिक समस्याओं को मनोवैज्ञानिक धरातल पर उद्घाटित किया है। बाल मनोविज्ञान के सूक्ष्म तत्वों का विश्लेषण भी उन्होंने अपनी खेल', 'पाजेब' आदि कहानियों में किया है। 'स्पर्धा', 'वातायन', 'फाँसी', आदि अनेक कहानी संग्रहों ने हिंदी कहानी को नयी अन्तर्दृष्टि, संवेदनशीलता और दार्शनिक गहराई प्रदान की है। जैनेन्द्र के साथ साथ अज्ञेय और इलाचन्द जोशी ने भी मनोविज्ञान के आधार पर कई कहानियाँ लिखीं। उन्होंने फ्रायड के यौनवाद को अधिक महत्व दिया। अज्ञेय की कहानियाँ मनोवैज्ञानिक होने पर भी

वे सामाजिक संघर्ष और विद्रोह के तीखेपन से भरे हैं। अज्ञेय के प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं – 'विपथगा', 'परंपरा', 'कोठरी की बात' आदि। इलाचन्द जोशी के 'रोमांटिक छाया', 'आहुति', 'दीवाली और होली' आदि कहानी-संग्रहों में मानव मन की विभिन्न कुंठाओं और गुत्थियों का विश्लेषण मनोविज्ञान के आधार पर किया गया है।

मनोविश्लेषणात्मक कहानियों के साथ साथ, इस युग में साम्यवाद, मार्क्सवाद आदि के तत्वों के आधार पर लिखित कहानियों भी प्राप्त हुई। इस प्रगतिवादी परंपरा में मुख्य रूप से यशपाल का नाम आता है। यशपाल ने अपनी कहानियों में पूँजीवादी सभ्यता का विरोध करते हुए सामाजिक विषमता की समस्याओं का व्यापक चित्रण किया। 'पिंजरे की उडान', ' तर्क का तूफान', 'फूलों का कुर्ता', 'वो दुनिया' आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। अमृतराय, रांगेय राघव, मन्मथनाथ गुप्त आदि कई कहानीकारों ने यशपाल की प्रगतिवादी परंपरा को अपनाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, सन् 1950 के आसपास हिंदी कहानी के क्षेत्र में एक नये आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ। निराशा, घुटन, क्षणवाद और जीवन के प्रति वितृष्णा को अभिव्यक्त करनेवाली कहानियाँ इस समय लिखी जाने लगीं। कहानी के नये आन्दोलन को नयी कहानी की संज्ञा दी गयी। नयी कहानी के प्रमुख लेखकों में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, कमलेश्वर, रमेश बख्शी, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मोहन राकेश के 'इन्सान के खण्डहर', 'नये बादल', 'जानवर और जानवर', 'एक और ज़िन्दगी' आदि कई कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए है। इनमें शहरी जीवन की कृत्रिमता, दांपत्य जीवन के विघटन, पारिवारिक संबन्धों के तनाव आदि का मार्मिक चित्रण हुआ है। राजेन्द्र यादव की कहानियों में आधुनिक भावबोध को नयी दृष्टि से संप्रेषित किया है। देवताओं की मूर्तिया', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' 'प्रतीक्षा' आदि अनेक कहानी संग्रहों में यादवजी ने शहरी जीवन की असंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है। कमलेश्वर के 'कस्बे का राजा', 'खोई हुई दिशाएँ', 'माँस का दरिया' कहानी संग्रह शहरी जीवन की विभिन्न अनुभूतियों के अंकन में सफल हुए हैं। उनकी कहानियों में युगीन संक्रमण का मूल्यान्वेषी स्वर मिलता है। भीष्म साहनी के कहानी संग्रहों में पहला पाठ, भटकती राख' महत्वपूर्ण हैं जिनमें आधुनिक जीवन की स्वार्थपरता और परंपरागत मूल्यों के विघटन का हृदयस्पर्शी वर्णन मिलता है। धर्मवीर भारती, दूधनाथसिंह, निर्मल वर्मा आदि ने व्यक्ति मन की

गहराइयों तथा सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन के तनावों का सूक्ष्म अंकन किया है। मन्नू भण्डारी ने दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन की विसंगतियों को केन्द्र बनाकर अनेक कहानियाँ लिखीं। उषा प्रियंवदा ने आधुनिक जीवन की निस्संगता, स्वार्थपरता एवं कृत्रिमता का सफल चित्रण अपनी कहानियों द्वारा प्रस्तुत किया है। कृष्णा सोबती, शिवानी, रजनी पणिक्कर, मेहरुन्नीसा परवेज़, आदि इस कालखण्ड की महिला कहानीकार है।

आधुनिक युग में, विशेषकर छठे दशक में, ग्रामांचल को केन्द्र बिन्दु बनाकर कुछ सुन्दर कहानियाँ लिखी गयीं। ग्रामांचल के कहानीकारों के रूप में शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, फणीश्वर नाथ रेणु के नाम मुख्य हैं। उनकी कहानियों में गाँव की मिट्टी की गंध, गाँव के जीवन का सच्चा चित्र मिलता है। मार्कण्डेय के महुए का पेड, भूदान, माही आदि कहानी संग्रहों में गाँव की सरल ज़िन्दगी के सुन्दर चित्र मिलते हैं।

नयी कहानी आन्दोलन के बाद हिंदी में सचेतन कहानी नामक आन्दोलन प्रसिद्ध हुआ। यह नयी कहानी आन्दोलन की प्रतिक्रिया के रूप में शुरू हुआ था। डा. महीपसिंह ने अपनी पत्रिका 'संचेतना' के माध्यम से इस आन्दोलन को विकसित किया। इसे सचेतन कहानी आन्दोलन कहते है। नयी कहानी के कथ्य एवं शिल्प पक्ष का विरोध करते हुए डॉ. महीपसिंह के अलावा मनहर चौहान, रामकुमार भ्रमर, बलराज पण्डित, वेद राही, मेहरुन्नीसा परवेज आदि अनेक कहानीकारों ने मिलकर संतुलित, स्वस्थ और व्यापक दृष्टिकोण के साथ, तात्विक आधार के साथ जीवन का विश्लेषण किया। डॉ. महीपसिंह के 'अजाले के उल्लू', 'घिराव', 'इक्यावन कहानियाँ', आदि कहानी संग्रह उल्लेखनीय है।

इस आन्दोलन के अतिरिक्त सातवीं एवं आठवी शताब्दी में हिंदी कहानी के क्षेत्र में और भी कई आन्दोलन प्रवर्तित हुए। उनमें सहज कहानी, समकालीन कहानी, अकहानी, समान्तर कहानी, सक्रिय कहानी आदि उल्लेखनीय हैं। सहज कहानी का प्रवर्तन अमृतराय ने किया। गंगाप्रसाद विमल ने समकालीन कहानी तथा राकेश वत्स ने सक्रिय कहानी नामक आन्दोलनों का नेतृत्व किया। जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार, दुधनाथ सिंह, गंगाप्रसाद विमल आदि अकहानी आन्दोलन में आनेवाले कहानीकार हैं। 1971 के लगभग समान्तर कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ। कमलेश्वर इसके प्रवर्तक थे। इसका प्रचार प्रसार मुख्य रूप से सारिका पत्रिका के माध्यम से हुआ।

आन्दोलन से जुडे हुऐ लेखकों के अलावा सातवें- अठवें दशक में हिंदी कहानी के क्षेत्र में कई कहानीकारों ने अपना विशेष स्थान पाया है। कहानी के इतिहास में उनका उल्लेखनीय स्थान है। महेन्द्र भल्ला, रमेश बक्षी, सुदर्शन चोपडा, गिरिराज किशोर, रवीन्द्र कालिया, गंगा प्रसाद विमल, नरेश आदि लेखकों ने मुख्य रूप से शहरी जीवन की कृत्रिमता, नारी-पुरूष संबन्धों की विभिन्न स्थितियों का चित्रण करनेवाली कहानियाँ लिखीं। इनमें व्यक्ति चेतना की प्रमुखता दिखायी पडती है।

हिंदी कहानी साहित्य : अद्यतन प्रवृत्तियाँ –

- हिंदी कहानी साहित्य में दलित विमर्श

मानवीय हकों से सभी प्रकार से वंचित, शोषित, पीडित, प्रगति में सबसे पिछडा हुआ और दबाया हुआ लोग माने हाशिएकृत वर्ग को तथा उनकी समस्याओं एवं उन पर हो रही शोषणों को नजरअन्दाज न करके अपनी रचनाओं के प्रमुख मुद्दे के रूप में चुनकर पाठकों को भी उनकी पीडा का अहसास कराने में आज के कहानीकार सफल हुए है। इन्हीं के फलस्वरूप आज साहित्यिक विधाओं में दलित साहित्य एक अलग साहित्य शाखा के रूप में आगे बढ़ रहा है। यह साहित्य सचमुच दलितों की आत्मपहचान का साहित्य है। आधुनिक संदर्भ में प्रेमचन्द से लेकर अनेक साहित्यकारों ने दलित जीवन को केन्द्र बनाकर अनेक रचनाएँ की थी, उनका उद्देश्य दलित समाज का उद्धार ही था। लेकिन इसमें कमी यह है कि इन्होंने दलित जीवन का यथार्थ चित्रण तो किया है पर वे उनकी मुक्ति केलिए आवश्यक दिशा-निर्देश देने में असफल रहे। अब दलित साहित्य ने भारतीय तथा विश्व साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। वैसे भी दलित साहित्य का उद्देश्य मात्र रसास्वाद नही है। सामाजिक जीवन की कठोर स्थितियों की सशक्त अभिव्यक्ति दलित साहित्यकार की रचनाओं में अधिक प्रखर है। जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकी कि यह अंत नही', 'शवयात्रा', 'बैल की खाल', 'अंधेरी बस्ती', मोहनदास नैमिशराय की 'कर्ज', महाशूद्र', 'अपना गाँव', 'रीत', सूरजपाल चौहान की 'जाति', बदबू', सुशीला टाकभौरे की 'सिलिया', 'बदला', 'टूटता वहम' इत्यादि महत्वपूर्ण कहानियों में जातिगत विषमता और दलितों की चारित्रिक विशेषतायें तथा मुक्ति के संघर्ष के स्वर मुखर हुए है। इनके अलावा डॉ.एन.सिंह,

डॉ. कुसुम वियोगी, प्रेम कपाडिया, दयानंद बटरोही, अरुण प्रकाश, मुद्राराक्षस, माता प्रसाद आदि कहानीकारों ने भी अपनी कहानियों के द्वारा दलितों की यर्थाथ जिन्दगी का चित्रण किया है।

- हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श

स्त्री लेखन का इतिहास वस्तुतः स्त्री के परिवेश और परिस्थितियों के साथ बदलते हुए संबन्धों का उसके अपने बदले हुए रूख और रवैये का इतिहास है। जिन सामाजिक, पारिवारिक दबावों के सांचे ने स्त्री के जीवन को ढाला उन्होंने उसे एक विकल्पहीन परिस्थिति के साथ बांध भी दिया, तो आज लेखिका ने अपने संघर्ष से अपनी इस स्थिति को बदल लिया है। प्रायः सभी लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में भारतीय परिवेश में अपनी मुक्ति केलिए छटपटाती नारी का चित्रण किया है। इस चित्रण में कुछ लेखिकाएँ तो सचेत भाव से स्त्रीवादी है, जिसके कारण उनके स्त्री-पात्र अकसर विद्रोह करते हैं। वे परंपरागत भारतीय नारी की तरह पति को अपनी अंतिम नियति मानकर झेलती नही है, बल्कि उसके साथ बराबरी का रिश्ता बना कर रहना चाहती हैं। इनके विपरीत कुछ लेखिकाएँ है जो सिद्धांततः स्त्रीवादी नही है, लेकिन उनकी कहानियों में भी पुरुष वर्चस्व को झेलते स्त्री पात्रों का चित्रण है। इसके बावजूद उनकी दृष्टि व्यापक है। उन्होंने स्त्री पुरुष संबन्धों के संदर्भ में पारिवारिक नैतिक मूल्यों के विघटन, रिश्तों के खोखलेपन, काम अतृप्ति, बलात्कार और स्त्री पर होनेवाले उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव आदि का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। उन्होंने अपनी कुछ कहानियों में यौन संबन्धों का काफी खुला और साहसिक चित्रण किया है। प्रायः लेखिकाओं की कहानियों में मध्यवर्गीय स्त्री पात्रों एवं उनकी समस्याओं का चित्र अधिकांश मात्रा में अंकित किये हैं। लेकिन अधिकांश लेखिकाओं ने इस सीमा का अतिक्रमण कर वेश्याओं, मेहनत-मजदूरी करनेवाली स्त्रीयों, आदिवासी एवं महानगरों की झुग्गी-झोंपडियों में रहनेवाली स्त्रीयों की दशा से ऊपर उठकर सांप्रदायिकता, आतंकवाद, भूमण्डलीकरण से उपजी आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं का भी यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में किया है। नयी कहानी आंदोलन के दौरान जो कहानी लेखिकाएँ उभर कर सामने आयी वे गिनी-चुनी है, किन्तु बाद की पीढ़ी की लेखिकाओं की संख्या अच्छी-खासी है, जो आज इक्कीसवीं सदी के पहले दशक की कहानियों की सूचियों से प्रमाणित हो जाती है। ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, राजी सेठ, ऊर्मिला शिरीष, मृदुला गर्ग, सुधा अरोडा, ऋता शुक्ल, चंद्रकांता, कृष्णा अग्निहोत्री, कुसुम

अंसल, मैत्रेयी पुष्पा, नमिता सिंह, गीतांजली श्री, अलका सरावगी, मणिका मोहिनी, सूर्यबाला, सुनीता जैन, मेहरुन्नीसा परवेज़, मंजुल भगत, सरिता शर्मा, कृष्णा सोबती, मृणाल पांडे, अनामिका आदि अनेक कहानी लेखिकाएँ इस समय सक्रिय है।

दूसरा ताजमहल, घर परिवार, वैक्यूम, अपना कमरा, वीक एंड, प्रतिनायक, भरी दोपहरें के अधेर, बीतते हुए, भूख, हरी बिन्दी, शहर के नाम, डेफोडिल जल रहे हैं, परिमला तुम हार गयी, प्रार्थना के बाहर, किस्सा ए कोहिनूर आदि कुछ स्त्री विमर्ष पर आधारित कहानियाँ है।

- हिंदी कहानी साहित्य में परिस्थिति

प्रकृति और मानव का अटूट संबन्ध युग युगान्तर से लेकर चलते आ रहे हैं। प्रकृति का एक ताल मेल होता है। जब यह ताल टूट जाता है तब प्रकृति विश्रंखल हो जाती है। प्रकृति के उस ताल को बनाये रखना मानव का कर्तव्य है। अनादि काल से लेकर प्रकृति से संबन्ध रखकर ही हर साहित्य निकलते हैं। आधुनिक समाज में आते ही मानव प्रकृति को भूलने लगते हैं। आधुनिकता को बनाये रखने केलिए प्रकृति की उपेक्षा करते रहते हैं। मानव अपने लिए प्रकृति का दुरूपयोग किस हद तक किये जाते उसी का वर्णन परिस्थिति संबन्धी साहित्य का प्रमुख विषय रहा है।

वर्तमान समय में पर्यावरण समस्या ने एक गंभीर रूप धारण किया है। शहरीकरण और औद्योगीकरण के चलते व्यापक रूप में पारिस्थितिक संपदा का विनाश हो रहा है। विकास के नाम पर की जानेवाली प्राकृतिक शोषण एवं पारिस्थितिक उन्मूलन के विरुद्ध कहानीकारों ने अपना कलम चलाया है। अमरीक सिंह दीप, जयनंदन, संदीप गुप्ता, उषा ओझा, संतोष साहनी, उदय प्रकाश, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा आदि की कहानियों में पर्यावरण की समस्याओं की चर्चा ज्यादा होती है।

इक्कीसवीं सदी का पेड, कल्यान का अंत, हथेली में पोखर, आखिरी निशानियों को बचा लो, पक्षि सुरक्षा वन, और अंत में प्रार्थना, गिद्द, एक कोई ओर, कुर्की, फ्लड कंट्रोल, पेड़ पेड़ पानी दे आदि कई कहानियाँ परिस्थिति से संबंधित हैं।

MODULE - 2

HINDI SHORT STORIES

1) दूध का दाम (प्रेमचन्द)

कथाकार : प्रेमचन्द

हिंदी साहित्य जगत में 'कलम का सिपाही' नाम से मशहूर प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाइÇ 1880 ई० में वाराणसी के पास लमही नामक गाँव में हुआ। उनका उसली नाम धनपतराय था। वे नवाबराय नाम से उर्दू में लिखते थे। इनकी पहली कहानी संसार का सबसे अनमोल रतन जमाना पत्रिका में छपी थी। राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत होने के कारण 1908 में उनकी पहली कहानी संग्रह 'सोजेवतन' को ब्रिटीश सरकार ने जब्त कर लिया गया। इसके बादवे प्रेमचन्द नाम से हिंदी में लिखने लगे।

कथा सम्राट के रूप में प्रेमचन्द हिंदी साहित्य का मील स्तंभ है। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ, ग्यारह उपन्यास और दो नाटकों की रचना की। ठाकुर का कुँआ, नमक का दारोगा, नशा, शतरंज के खिलाडी, कफन आदि इनकी कहानियाँ है। उनकी सभी कहानियों का संग्रह 'मानसरोवर' नाम से प्रकाशित हुआ है। गोदान, गबन, निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि आदि इनके उपन्यास है। उन्होंने जमाना, माधुरी जागरण और हंस पत्रिकाओं का संपादन किया। 1936 ई० में अपने 56 वर्ष की आयु में प्रेमचन्द का निधन हो गया।

कथावस्तु : दूध का दाम

दूध का दाम हमेशा की तरह प्रेमचन्द की एक मार्मिक कहानी है जहाँ पर प्रेमचन्द ने सामाजिक विषयों के बारे में अपनी आवाज उठायी है। जाति भेदभाव और गरीबी इसका विषय है। ये कहानी एक भंगी और उसका बेटा मंगल के जीवन को चित्रित करती है।

बाबू महेशनाथ अपने गाँव के जमीन्दार थे, शिक्षित थे। तीन बेटियों के बाद अब उन्हें एक लडका पैदा हुआ। मालकिन मोटी-ताजी देवी थी पर अबकी कुछ ऐसा संयोग कि उन्हें दूध हुआ ही नही। देहातों में जच्चेखानों पर अभी तक भंगिनों का ही प्रभुत्व है और गूदड के घर में इस शुभ अवसर केलिए महीनों से तैयारी हो रही थी। भूंगी ने अपने तीन महीने के बालक को गूदड के सुपुर्द कर सिपाही के साथ चल खडी हुई। महेशनाथ के यहाँ अब भी भूँगी की खूब खातिरदारियाँ होने लगी। सबेरे हरीरा मिलता, दोपहर को पूरियाँ और हलवा, तीसरे पहर को फिर और रात को फिर और गूदड को भी भरपूर परोसा मिलता था। भूँगी अपने बच्चे को दिन-रात में

एक-दो बार से ज्यादा न पिला सकती थी। उसकेलिए ऊपर के दूध का प्रबन्ध था। भूँगी का दूध बाबूसाहब का भग्यवान लडका पीता था। यह सिलसिला महीनों तक चलता रहा। भूँगी का लाडला ऊपर का दूथ हजम न कर सकने के कारण बार-बार उलटी करता और दिन-दिन दुबला होता जाता था।

घर में मालकिन के बाद भूँगी का राज्य था। महरियाँ, महराजिन, नौकर-चाकर सब उसका रोब तानते थे। यहॉ तक कि ख़ुद बहुजी भी उससे दब जाती थी। भूँगी का शासनकाल साल-भर से आगे न चल सका। देवताओं ने बालक के भंगिन का दूध पीने पर आपत्ति की, मोटेराम शास्त्री तो प्रायश्चित का प्रस्ताव कर बैठे। प्रायश्चित तो न हुआ, लेकिन भूँगी को गद्दी से उतरना पडा।दान

- दक्षिणा इतनी मिली कि वह अकेले ले न जा सकी और सोने के चूडे भी मिले। एक की जगह दो नयी सुन्दर साडियाँ भी मिली थी।

इसी साल प्लेग ने जोर बाँधा और गूदड पहले ही चपेट में आ गया। भूँगी अकेली रह गयी। यहाँ तक कि पाँच साल बीत गये और उसका बालक मंगल दुर्बल और सदा रोगी रहने पर भी दौडने लगा। बाबू साहब का बेटा सुरेश के सामने पिद्दी सा लगता था। एक दिन भूँगी महेशनाथ के घर का परनाला साफ कर रही थी। उसी वक्त एक काला साँप उसे ढस लिया और परनाले से निकलकर भागा। लोगों ने दौडकर उसे मार तो डाला, लेकिन भूँगी को न बचा सके। मंगल अब अनाथ था। दिन-भर महेशबाबू के द्वार पर मँडराया करता। खाने की कोई कमी न थी। बल्कि जब उसे मिट्टी के कसोरों में खाना दिया जाता था तब उसे बुरा लगता था। यों उसे इस भेदभाव का बिल्कुल न ज्ञान होता था, परन्तु गाँव के लडके चिढा-चिढाकर उसका अपमान करते रहते थे।

मकान के सामने एक नीम का पेड था, इसी के नीचे मंगल का डेरा था। एक फटा-सा टाट का टुकडा, जो मिट्टी के कसोरे और एक धोती, जो सुरेश बाबू की उतरन थी, जाडा, गरमी, बरसात हरेक मौसम में वह जगह एक-सी आरामदेह थी और भाग्य का बली मंगल झुलसती हुई लू, गलते हुए जाडे और मूसलाधार वर्ष में भी जिन्दा और पहले से कहीं स्वस्थ था। बस उसका कोई अपना था, तो गाँव का एक कुत्ता जो अपने सहवर्गियों के जुल्म से दुखी होकर मंगल की शरण आ पडा। दोनों एक ही खाना खाते, एक ही टाट पर सोते और दोनों एक-दूसरे के स्वभाव को जानते थे।

एक दिन सुरेश और उनके साथियाँ खेल रहे थे। मंगल भी पहूँचकर दूर खडा हो गया। उन्होंने मंगल को घेर लिया और जबरदस्ती घोडा बना दिया। सुरेश ने चटपट उसकी पीठ पर आसन जमा लिया। मंगल कुछ देर तक तो चला, लेकिन उस बोझ से उसकी कमर टूटी जाती थी। उसने धीरे से पीठ सिकोडी और सुरेश लद से गिर पडे और रोकर माँ के पास फरियाद लेने चला। माँ को विश्वास न आया, लेकिन जब सुरेश कसमें खाने लगा तो हुक्म दिया कि अभी-अभी यहाँ से निकल जा। मंगल चुपके से अपने सकोरे उठाये, टाट का टुकडा बगल में दबाया और रोता हुआ वहाँ से चल पडा। उसी खंडहर की ओर चला, जहाँ भले दिनों की स्मृतियाँ उसके आँसू पोंछ सकती थी और खूब फूट-फूटकर रोया। टामी भी उसे ढूँढता हुआ पहूँचा।

लेकिन जब रात आया बचपन को बेचैन करने वाली भूख देह का रक्त पी-पीकर और भी बलवान होती जाती थी। आँखें बार-बार कसोरों की ओर उठ जाती। जब भूख से न रहा पाया तो दोनों सीधे महेशनाथ के द्वार पर अँधेरे में दबकर खडे हो गये। जब सारे लोग थाली से उठ गये तो वह निराश से एक लम्बी साँस खींचकर जाना ही चाहता था कहार पत्तल में थाली का जूठ ले जाता नजर आया।

पेट की आग को रोक न सका तो मंगल अंधेरे से निकलकर प्रकाश में आ गया। कहार ने पत्तल को ऊपर उठाकर मंगल के फैले हुए हाथों में डाल दिया। मंगल ने उसी ओर ऐसी आँखों से देखा, जिसमें दीन कृतज्ञता भरी हुई थी। भोजन खाते वक्त मंगल अपने दोस्त टोमी कुत्ते से कहता है- 'लोग कहते है दूध का दाम कोई नही चुका सकता और मुझे दूध का यह दाँम मिल रहा है'।

2) <u>पाजेब (जैनेन्द्र)</u>

<u>कहानीकार : जैनेन्द्र</u>

जैनेन्द्र ने कहानी को मनोविज्ञान से जोडकर नई परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने अपनी विशिष्ट चिंतन शक्ति और विचार प्रवाह से कथा साहित्य को महत्वपूर्ण दिशा दी। मानव मनोविज्ञान का उद्‌घाटन उनकी रचनाओं की मूल प्रेरणा रही है। उन्होंने पात्रों की मनःस्थिति और बाह्य जगत के संघर्षों का बारीक चित्रण किया है। परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त आदि इनके प्रमुख उपन्यास है। कहानीकार के रूप में भी जैनेन्द्र की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण है। फॉसी, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, दो चिडिया, पाजेब, जयसन्धि इनके कहानी संग्रह है। बालमनोविज्ञान स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संबन्ध, परंपरागत मूल्यों और सामाजिक बंधनों से जुझते व्यक्ति के संघर्ष उनकी कहानियों की विषयवस्तु रहे है। निश्चय ही वे हिन्दी में वैयक्तिक भावानुभाव के प्रथम कथाकार है।

वे जीवन की आन्तरिक गहराई को अभिव्यक्ति देनेवाले गंभीर विचारक और समर्पित कलाकार है। उन्होंने निबंध, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, आलोचना आदि कई गद्य-विधाओं को समृद्ध किया है। जैनेन्द्र ने सदैव पाठक के संवेदन को स्पर्श करने का प्रयत्न किया है और अंत तक इसी के विश्वासी रहे हैं।

जैनेन्द्र के व्यक्तित्व की जूढता उनकी भाषा में आ गयी है। साहित्य की भाषा में आप व्यंजना को महत्व देते हैं। आपकी रचनात्म्क कृतियों में यह व्यंजनात्मक भाषा बहुत कुछ अनकहा छोड देती है।

कथावस्तु : पाजेब

पाजेब कहानी का धरातल बहुत ही साधारण सा है जिसे लेखक ने आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। पर मूलतः इस साधारण सी कथा का वैचारिक धरातल बहुत असाधारण है। एक छोटी सी घटना से कहानी की शुरुआत होती है। कथावाचक बताता है कि बाज़ार में एक नई तरह की पाजेब चली है। जो बहुत ही सुन्दर है। जिसके पाँव में पड़ती है उसी के नाप की हो जाती है। आस-पास सबके पास वह पाजेब है। बच्चों की इसी देखा देखी में चार बरस की मुन्नी भी जिद करती है कि उसे पाजेब चाहिए। उसी दिन दोपहर को मुन्नी की बुआ आती हैं और अगले इतवार को उसके लिए पायल लाने का वादा करके चली जाती हैं। अगले इतवार को बुआ मुन्नी के लिए पाजेब ले आती हैं। मुन्नी पाजेब पहनकर खुशी से फूली नहीं समाती और आस-पास सभी को पाजेब दिखाती है। मुन्नी के नन्हें-नन्हें पैरों में पाजेब उसके आठ बरस के भाई आशुतोष को भी बहुत भाती है और वह भी उसे आस-पास दिखाने ले जाता हैं और खूब खुश होता हैं। कुछ ही देर बाद मुन्नी की पाजेब देख आशुतोष को ईर्ष्या होने लगती है। वह जिद करता है कि मुन्नी को पाजेब दी हम भी बाइसिकिल लेंगे। बुआ ने उसे समझाया कि –'छी-छी तू कोई लडकी है? जिद तो लड़कियाँ किया करती हैं और लड़कियाँ रोती हैं। कहीं बाबू साहब लोग रोते हैं!'

बुआ आशू से उसके जन्मदिन पर बाइसिकिल देने का वादा कर के चली जाती हैं। इधर बुआ के जाते ही मुन्नी की माँ यानि कथावाचक की श्रीमती जी भी पाजेब बनवाने की ख्वाहिश प्रकट करती हैं। और पाजेब संभालकर रख देती है। अचानक रात को जब लेखक अपनी मेज पर होते हैं श्रीमती जी आकर एक पाजेब के खो जाने का जिक्र करती हैं। लेखक के यह कहने पर कि पाजेब के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं है वे नौकर बंसी का इसमें हाँथ होने पर संदेह करती हैं। पर लेखक को बंसी पर पूरा विश्वास है कि यह चोरी उसने नहीं की। इस पर श्रीमती जी कहतीं हैं –" हो चुका बस कुछ तुमसे। तुम्हीं ने तो उस नौकर की जात को शहजोर बना रखा है।

डांट न फटकार, नौकर ऐसे सिर न चढ़ेगा तो क्या होगा।" श्रीमती जी का मानना था कि हो न हो सोलह में से पन्द्रह आने यह बंसी का ही काम है। 'नौकर तो बड़े छंटे होते हैं। जरुर बंसी ही चोर है। नहीं तो क्या फ़रिश्ते लेने आते'।

फिर लेखक ने श्रीमती जी से पूछा कि उन्होंने आशुतोष से पूछा कि कहीं पाजेब उसने तो नहीं देखी? देखी इस पर श्रीमती जी ने कहा कि वे पूछ चुकीं हैं। आशुतोष के पास पाजेब नहीं है। वे बोलीं- " वह तो खुद ट्रंक और बक्स के नीचे घुस-घुस कर खोज लगाने में मेरी मदद करता रहा है"। इस पर लेखक ने कहा कि उसे पतंग का बहुत शौक है। श्रीमती जी उलटे लेखक पर ही बरस पड़ीं कि वे ही उसे पतंग की शह देते हैं। बाद में लेखक को पता चला कि उसी शाम को आशू पतंग और एक डोर का पिन्ना नया लाया है। दूसरे दिन लेखक ने आशू को बुलाकर पूछ-ताछ शुरू की। यही से शरू होता है कहानी का वास्तविक धरातल और जैनेन्द्र के मूल विचार। पिता के पूछने पर आशू सिर हिलाकर मना कर देता है। पिता (लेखक) के मन में तरह तरह के सिद्धांत आने लगते हैं। वह सोचता है कि ऐसे समय में बालकों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। 'प्रेम से ही अपराधवृत्ति को जीता जा सकता है'। लेखक कई बार बात को घुमा-घुमा कर आशू से सच उगलवाने का प्रयास करता है। इस पर आशू क्रोधित हो जाता है। लेखक को प्रतीत होता है कि 'उग्रता दोष का लक्षण है'। फिर श्रीमती जी के पूछने पर लेखक कहता है कि संदेह तो मुझे होता है।

लेखक सोचता है कि यह एक भारी दुर्घटना है। अगर बच्चे ने चोरी की है तो उसमें बच्चे स ज्यादा मात-ति का दोष है। यह उसके ऊपर एक भारी इल्जाम है और यह उसकी (लेखक और श्रीमतीजी की) आलोचना है। लेखक आशू को बुलाकर फिर पूछता है कि पाजेब उसने छुन्नू को दी है न? इस पर बालक पहले तो मना कर देता है पर बार-बार पूछे जाने पर सिर हिला कर हां कर देता है। लेखक कहता है मुंह से बोलो! आशु ने कहा- 'हाँ-आ'। लेखक खुशी के मारे आशू को गोद में उठा लेता है और गर्व से श्रीमती जी के पास ले जाकर कहता है कि हमारे बेटे ने सच कबूल कर लिया है। और श्रीमती जी भी अपने बेटे की बलैंयाँ लेने लगती हैं। फिर लेखक आशू को अकेले में ले जाकर उससे कहता है कि जाओ बेटे छुन्नू से पाजेब छुन्नू के पास नहीं हुई तो वो कहाँ से लाकर देगा? लेखक ने कहा कि छुन्नूने जिसे पाजेब दी होगी उसी का नाम बता देगा। यह सुनकर भी आशू बार-बार यही बात दोहराता रहा कि अगर छुन्नू के पास न होगी तो वो कहाँ से लाकर देगा। तब लेखक कई प्रकार से बेटे से बात निकलवाने का प्रयास करता है। वो जो-जो कहता है आशू सिर हिला कर हाँ में जवाब देता है। वो कहता है –"अच्छा तुमने कहाँ से उठाई

थी?" आशू –"पडी मिली थी ।" लेखक –" नीचे जाकर छुन्नू को दिखाई?" आशू –" हां"। लेखक –"अच्छा पतंग लाने को कहा?" आशू - हाँ"। लेखक –" सो पाजेब छुन्नू के पास रह गई"। आशू –" हां"। लेखक –" सो पाजेब छुन्नू के पास रह गई"। आशू –"हां"। बाद में निष्कर्ष निकला कि पाजेब पतंग वाले के पास होगी। फिर लेखक ने कहा कि जाओ बेटा छुन्नू से यह पतंग वाले से पाजेब ले आओ उसे कहना कि हमारे बाबूजी तुम्हें इनाम देंगे। इसके बाद भी आशू यही दोहराता रहा कि छुन्नू के पास न हुई तो वो कहाँ से लाकर देगा?

पिता को बच्चे की जिद बुरी मालुम हुई। वह गुस्से में बच्चे को ताड़ता रहा और कहा कि –"जाओ जहां हो वहीं से पाजेब लेकर आओ।"पर आशू अपनी जगह से हिला तक नहीं तो पिता ने उसे कान पकड़ कर उठाया और कहा कि –" जाओ पाजेब लेकर आओ नहीं तो घर में तुम्हारा कम नहीं।" पिता को बहुत क्षोभ हो रहा था कि आशू सच बोलकर अब किस बात से डर रहा है। उसने फिर से बच्चे को पाजेब लाने के लिए प्यार से मनाया और कहा कि जिसको बेचीं होगी उससे कहना की दाम दे देंगे।इधर बीच श्रीमती जी छुन्नू की माँ से बात कर आई। छुन्नू की माँ ने कहा कि उसका लड़का ऐसा काम नहीं करता। छुन्नू ने आशू से कहा कि- "क्यों रे मुझे कब दी थी?" उलटे आशू ने जिद करके कहा कि- " कह दो नहीं दी थी?" नतीजा यह हुआ छुन्नू की माँ ने उसे खूब पीटा और खुद भी रोने-गाने लगी। रह-रह कर छुन्नू को खूब कोसा भी।

घर लौट कर श्रीमती जी ने छुन्नू और उसकी माँ को जली-कटी सुनाई और कहा कि छुन्नू और उसकी माँ दोनों एक जैसे हैं। लेखक ने श्रीमती जी के आचरण पर आपत्ति जताई। कुछ देर बाद छुन्नू और उसकी माँ श्रीमती जी के साथ लेखक के घर आए। दोनों महिलाओं के बीच अब शांति थी। छुन्नू की माँ कहने लगीं कि छुन्नू तो पाजेब के लिए इनकार करता है। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि वे पाजेब के दाम दे देंगी। लेखक को यह बात जांची नहीं और उसने छुन्नू से फिर से पूछा। छुन्नू ने फिर इंकार किया और कहा कि मैंने पाजेब आशु के हाँथ में देखी थी। वह पतंग वाले को दे आया। पाजेब चांदी की थी। छुन्नू ने आगे जोड़ा कि मुझे भी साथ चलने के लिए कह रहा था। लेखक ने छुन्नु की माँ से कहा देखिये पहले तो देखने से इनकार कर रहा था अब खुद ही सारी बात बता दी। छुन्नू की माँ फिर उसे पीटने लगीं। लेखक ने बीच-बचाव करके छुन्नू को बचाया। फिर छुन्नू को बाहर खेलने भेज दिया। छुन्नू की माँ ने आग्रह किया कि मन को तसल्ली देने के लिए यदि वे चाहें तो घर की तलाशी ले सकते हैं। पाजेब यदि होगी तो जायेगी कहाँ? लेखक ने बिना वजह बात के बढ़ने का संदेह जताया और तलाशी से इंकार कर दिया।

इस पूरे क्रम में लेखक अपने दफ्तर समय से नहीं जा पाता और जाते-जाते श्रीमती जी को आशू से प्रेमपूर्वक बात निकवाने का जिम्मा सौंप देता है। लौटने पर श्रीमती जी बताती हैं कि आशू ने सारी बातें सच-सच उगल दी हैं। ग्यारह आने पैसे में वह पतंग वाले को पाजेब दे आया है। पतंग वाले ने पांच आने दिये हैं और बाकी थोड़े थोड़े करके देने को कहा है। उन्होंने आगे जोडा- " दो-तीन घंटे मैं मगज मारती रही। हाय राम, बच्चे का भी क्या जी होता है।" लेखक को खुशी हुई कि पांच आने दे कर पाजेब वापस ले आयेंगे। लेकिन पतंग वाला भी कितना बदमाश है कि बच्चों से ऐसी चीज लेता है। उसे तो जेल में भेज देना चाहिए। लेखक ने बाहर खेल रहे आशू को नौकर से कह कर बुलवाया। पिता को देखते ही आशू फिर उदास हो गया। पिता ने बहलाते हुए उसे गोद में उठा लिया प्यार किया और कहा "हमारे आशुतोष बड़ा सच्चा लड़का है।"

लेखक फिर कहने लगा कि पांच आने में पाजेब बेच दी। हमसे मांग लेते तो क्या हम न देते। चलो अब ऐसा मत करना। इसके बाद कमरे में ले जाकर आशुतोष से पूछताछ शुरू कर दी।आशू सारे जवाब हां, नहीं में देता रहा। देर तक सवाल-जवाब का सिलसिला यूँ ही जारी रहा। लेखक को आशुतोष पर क्रोध आने लगा और वह जोर-जोर से सवाल करने लगा। उसने पूछा – " सच क्यों नहीं बोलते जी? सच तो बताओं कितनी इकन्नियाँ थीं और कितना क्या था?" बार-बार वही बातें दोहराने पर आशू डर गया। लेखक ने उसके कान पकड़कर खींचे इस पर भी वह कुछ न बोला। न रोया ही बस डर के मारे पीला हो गया और गुमसुम से खड़ा रहा। इसपर लेखक ने नौकर बंसी को बुलाकर आशू को कोठारी में बंद करने का आदेश दिया।

आशू केठरी में बंद होने पर भी रोया नहीं, पर उसका मुंह जरूर सूजा गय। दस मिनट के बाद लेखक ने आशू को बुलवाया। फिर पाजेब की पूछताछ शुरू हो गई। लेखक को लगा कि बच्चा शायद अब कुछ बोले पर बच्चा कुछ न बोला। लेखक ने पूछा कि पतंग वाला कौन सा था। आशू कुछ न बोला। लेखक –" वह चौराहे वाला? बोलो - आशू –"हाँ"। फिर लेखक ने समझाया कि अपने चाचा के साथ जाओ और बता देना कि पतंग वाला कौन सा है। वो सब देख लेंगे। लेखक ने अपने भाई को बुलाया और सब समझाकर कहा कि पांच आने पैसे ले जाओ। पहले तो आशुतोष पैसे जाकर देगा और पाजेब ले लेगा। तुम दूर ही रहना। अगर पतंग वाले ने पाजेब नहीं दी तो उसे डांटना, कहना कि पुलिस में दे देंगे। सख्ती से पेश आना। लेखक ने फिर आशुतोष को चाचा के साथ जाने को कहा। पर आशू ने इंकार कर दिया। इसपर लेखक ने समझाया कि बेटा जाओ पैसे देकर अपनी चीज ले लेना। भला कोई रुपये की चीज पांच आने में

बेचता है क्या? जाओ कुछ नहीं होगा पैसे देकर मांग ले लेना अगर न दे तो कोई बात नहीं। फिर तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं। फिर भी आशू ने जाने से इनकार कर दिया। लेखक को बुरा लगा कि आखिर समझाने पर भी बच्चा बात नहीं मानता। उसने फिर डांट कर कहा कि, "क्यों रे, नहीं जाएगा?" आशू ने सिर हिला कर मना कर दिया। लेखक ने अपने छोटे भाई प्रकाश को बुलवाया और जबरदस्ती उसे ले जाने का आदेश दिया। प्रकाश ने आशू को पकडा। बच्चा चाचा से अपने को छुडाने की कोशिश में हाँथ-पाँव मारता रहा। लेखक ने फिर धैर्य धारण करते हुए बच्चे को समझाया। घर की चीज के खो जाने की बात कही। प्रकाश को कहा कि आशू को जो चीज बाजार से चाहिए उसे दिला देना। आशू जैसे-तैसे चाचा के साथ गया। मानो उसका उठाना भी भारी हो रहा हो। लेखक को उसके इस व्यवहार पर बहुत गुस्सा आ रहा था। पर उसने यह सोचकर कि गुस्से से बच्चे सँभलने की जगह और बिगड़ जाते हैं उसने खुद पर काबू किया।

कुछ देर बाद आशू चाचा के पास से भाग गया और प्रकाश वापस लौट आया। लेखक को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने फिर आशू की पूछ ली। उसे फिर पकड़ कर बुलाया। इस बार गुस्से में दो थप्पड़ भी जड़ दिये। आशू एक बार चीखकर चुप हो गया। लेखक ने फिर दो-चार बातें सुनकर उसे कोठारी में बंद करने का आदेश दिया। एक-आध घंटे बाद जब लेखक का दिमाग ठंडा हुआ तो उसने सोचा कि मैं यह ठीक नहीं कर रहा हूँ। जब दूसरा रास्ता नहीं दीखता तो मार-पीट कर मन को ठिकाना देने की आदत पड़ जाती है। पर इसका उसे अभ्यास नहीं है। उसने प्रकाश को बुलाकर कहा कि बंसी को लेकर वह पतंग वाले के पास जाए और पता करे कि पाजेब किसने ली है। होशियारी से मालूम करना, सख्ती से पेश आना। कुछ देर बाद प्रकाश लौट आया और बताया कि किसी के पास पाजेब नहीं है। लेखक ने प्रकाश को भी उसकी अकर्मण्यता के बारे में सुनाया और जाने का आदेश दिया।

कोठरी खुलवाई गई तो आशुतोष जमीन पर सो रहा था। लेखक ने उसे जगाया और पूछाा कि क्या हाल है? पहले तो आशू कुछ समझा नहीं फिर पिछली बातें याद आने पर वही जिद, अकड़ और प्रतिकार के भाव उसके चेहरे पर आ गये। लेखक ने फिर कहा कि जाओ पाजेब ले आओ नहीं तो फिर कोठारी में बंद कर देंगे। आशुतोष पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। पिता ने एक रुपए निकाल कर दिये और समझाकर कहा कि इसे पतंग वाले को दे देना और पाजेब मांग लेना। इसपर आशुतोष ने कहा कि अगर पाजेब पतंग वाले के पास नहीं हुई तो वह कहाँ से लाकर देगा? पिता- क्या मतलब? तुम्हीं ने तो कहा था कि पाजेब पांच आने में दी है। अपने साथ छुन्नू को भी ले जाना।आशू फिर भी मुंह बांधे खड़ा रहा। पिता को गुस्सा आया पार

सामने बुआ को आती देख वह कुछ न बोला और आशू को प्रेमपूर्वक उसके चाचा के साथ जाने को कहा। बुआ ने आशू को प्यार किया और कहा कि कहाँ जा रहे हों मैं तो तुम्हारे लिए केले और मिठाई लाई हूँ। आशुतोष रुकने वाला था कि पिता ने उसे जाने का आदेश दिया और बुआ से भी कहा कि अभी उसे जाने दो। पर आशुतोष मचलने लगा तो पिता ने उसे डांट कर कहा कि प्रकाश इसे ले जाओ। बुआ ने फिर बात जाननी चाही पर लेखक ने नौकर बंसी को बुलाकर प्रकाश और आशुतोष के साथ जाने को कहा। बुआ ने फिर पूछा कि क्यों बच्चे को सता रहे हों? लेखक ने बात टाल दी।

आशूतोष के जाते ही बुआ ने लेखक से हाल-चल लिया। इधर-उधर की बातें की। फिर छोटा सा बक्सा सामने सरकाकर बोलीं कि इसमें वह कागज़ हैं जो तुमने मंगाए थे। और बास्केट की जेब में हाँथ डालकर पाजेब निकाली। पाजेब देखते ही लेखक के होश उड़ गए। उसे लगा कि जैसे सामने पाजेब न होकर बिच्छू हो। बुआ बोलीं कि –" उस रोज भूल से यह एक पाजेब मेरे साथ ही चली गयी थी।"

कहानी का उद्देश्य

जैनेन्द्र समाज से साहित्य की ओर बढ़ने वाले रचनाकार हैं। वे वर्तमान को भविष्य के सन्दर्भ में रखकर देखते हैं। बालपन मानव का कोई व्यतीत अतीत न हेक उसक आप बीती होती है। बच्चे का अपने माँ-बाप से सम्बन्ध मिट्टी का कुम्हार के सम्बन्ध जैसा होता है। बच्चों के मानसिक विकास और व्यवहार में उसकी पारिवारिक भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। कहानी में पाजेब के खो जाने से और पिता के शक के कारण पिता-पुत्र दोनों में संघर्ष से संवेदना की जो चिंगारियां छटकतीं हैं। वे ही कहानी के केन्द्र में हैं। जैनेन्द्र ने पिता-पुत्र के इस रिश्ते को बहुत बारीकी से पकड़ा है और उसे रेखांकित करने की जिम्मेदारी को अनुभव किया। बच्चे की लापरवाही पिता को उसके प्रति क्रूर बना देती है। दोनों के बीच एक तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। पाजेब की मूल समस्या यह है कि यहाँ पिता चिन्तक अधिक और पिता कम है। समस्या कर्तव्य के बोध और अहं के समर्पण के बीच समझौता न कर पाने स उत्पन्न होती है। यह बहुत ही आम स्थिति है जो कहानी में दर्शायी गई है। वस्तुगत कारण पर आधारित होने के कारण ही कहानी द्रवित करती है।

3) परदा (यशपाल)

कथाकार यशपाल

मार्क्सवाद से प्रभावित समाजवादी विचारधारा के कहानीकारों में सबसे प्रसिद्ध यशपाल का हिंदी साहित्य में अपना एक अलग स्थान है। उनकी कहानियों के केन्द्र में मुख्यतः मध्य और

निम्नमध्यवर्गीय जीवन है। इन्होंने ज्ञानदान, अभिशप्त, तर्क का तूफान, वो दुनिया, फूलों का कुर्ता, उत्तराधिकारी आदि सोलह कहानी संग्रहों की रचना की। दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, दिव्या, अमिता, झूठा-सच आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। कथाकार के अलावा वे एक अच्छे निबन्धकार भी हैं- न्याय का संघर्ष, देखा-सोचा-समझा उनके निबन्ध संग्रह है। सिंहावलोकन संस्मरणात्मक जीवनी है।

उन्होंने समकालीन सामाजिक जीवन के सहज कथानकों और वास्तविक विवरणों को छोडकर उन मुद्दों को कहानी का विषय बनाया जिनके विनाश के बाद ही सामाजिक जीवन को परिवर्तन के योग बनाया जा सकता था। रूढियों और अंधविश्वासों पर कठोर व्यंग्य और साहसपूर्ण उक्तियों के कारण देश में उनकी कहानियों का एक बहुत बडा पाठक वर्ग तैयार हो गया. वे जीवन भर समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण के रास्ते में आनेवाली बाधाओं के विरुद्ध रचनात्मक संघर्ष करते रहे। 1970 में पद्मभूषण, 'मेरी तेरी उसकी बात' उपन्यास केलिए 1976 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

वे प्रगतिवाद के समर्थक और उन्नायक है। उन्होने जीवन संदर्भ को सजीव बनाने केलिए परिवेश के अनुकूल शब्दचयन किये हैं। इनकी भाषा-शैली कथ्य के अनुसार अपना स्वरूप निर्माण करती है। जनबोली में प्रचलित देशज शब्दों से लेकर उर्दू, अंग्रेजी और रूसी भाषा तक के शब्द आपकी कृतियों में प्रयुक्त हूए हैं। उनकी सुलझे हुए व्यक्तित्व ने हिंदी गद्य शैली को भी नयी दिशा दी है। विचारों की स्पष्टता, अनुभव की विविधता, भावों की सरलता, व्यंग्य की तीव्रता, हास्य की मधुरता तथा विवरण की विशदता सब मिलकर आपकी गद्य-शैली को बडा ही आकर्षक एवं प्रभावशाली बना दिया। साहित्य रचना यशपाल केलिए साध्य नही, साधन है। यशपाल का लक्ष्य पीडित और दलित मानवता के उद्धार केलिए परिस्थितियाँ उत्पन्न करना है। वे गद्य साहित्य के अनेक माध्यमों से अपने इस लक्ष्य पर अग्रसर रहे हैं।

<u>कथावस्तु - परदा</u>

चौधरी पीरबक्श के दादा चुंगी के महकमे में दारोगा थे। आमदनी अच्छी थी। एक छोटा, पर पक्का मकान भी उन्होंने बनवा लिया था। उन्हें दो लडके थे, चौधरी फज़लकुर्बान जो रेलवाई में काम करते थे, दूसरा चौधरी इलाहीबक्श डाकखाने में थे। इलाहीबक्श को चार बेटे और दो लडकियाँ थी। इनमें पहले तीनों लडके होनहार थे और तीनों को अच्छे नौकरी भी मिली। चौथे लडके पीरबक्श प्राइमरी से आगे न बढ सके। उन्होंने रोजगार के तौरपर खानदान की इज्जत के ख्याल से एक तेल की मिल में मुंशीगिरी कर ली थी।

पीरबक्श दलितों के मोहल्लें में रहते हैं। पूरे मोहल्ले में चौधरी पीरबक्श ही पढ़े-लिखे और सफेदपोश थे। सिर्फ उनके ही घर ड्योढी पर पर्दा था। सब लोग उन्हें चौधरी जी, मुंशी जी कहकर सलाम करते थे। उनके घर की औरतों को कभी किसी ने गली में नहीं देखा था। पीरबक्श ख़ुद ही मुस्कराते हुए सुबह-शाम कमेटी के नल से घडे भर लाते थे। चौधरी की तनख्वाह पन्द्रह बरस में बारह से अठारह हो गयी थी। ख़ुदा की बरक्कत होती है तो रुपये-पैसे की शक्ल में नही, आस-औलाद की शक्ल में होती है। पन्द्रह बरस में पाँच बच्चे हुए थे। पहले तीन लडकियाँ और बाद में दो लडके। गुजारा बमुश्किल हो पाता है। जरुरत पडने पर चौधरी घर की छोटी-मोटी चीज गिरवी रख उधार ले आते थे। मुहल्ले में चौधरी की इज्ज़त थी। उस इज्ज़त का आधार था, घर के दरवाजे पर लटका परदा। भीतर जो हो, परदा सलामत रहता था। कभी बच्चों की खींच-खाँच या बेदरद हवा के झोंकों से उसमें छेद हो जाते तो सुई-धागा लेकर उसकी मरम्मत कर देते थे।

दिन बीत गये। मकान की ड्योढी के किवाड गलते-गलते बिल्कुल गल गये थे। अचानक एक दिन किवाड गिर गये। रात में चौधरी उन्हें जैसे-तैसे चौखट से टिका देते। अगर कोई चोर आ जायें, इसलिए वह रात भर दहशत रहती। सच तो यह है कि मुहल्ले में सफेदपोशी और इज्ज़त होने पर भी चोर केलिए घर में कुछ न था। चोर से ज्यादा फिक्र थी आबरु की। किवाड न रहने पर परदा ही आबरु का रखवाला था। यह परदा भी तार-तार होते-होते एक रात आँधी में किसी भी हालत में लटकाने लायक न रह गया था। दूसरे दिन सुबह घर की एकमात्र पुश्तैनी चीज़ दरी दरवाजे पर लटका दी गयी। मुहल्ले वाले ने टाट का टुकडा लटकाने को सलाह दी। लेकिन चौधरी साहब की आमदनी से दिन में एक बार किसी तरह पेट भर सकने केलिए आटे के अलावा कपडे की गुंजाइश कहाँ थी?

गिरवी रखने केलिए घर में जब कुछ न हो गरीब का एकमात्र सहायक है पंजाबी खान। रहने की जगह भर देखकर ही वह रुपया उधार दे सकता है। मुहल्ले के अन्य लोग भी बबर अली से कर्ज लेते रहते थे। खान को वे शैतान समझते थे लेकिन लाचार हो जाने पर उसकी ही शरण लेनी पडी। पीरबक्श भी अपने बेटे के जन्म के समय रुपये की कहीं और कोई प्रबन्ध न हो सकने के कारण पंजाबी खान बबर अली खाँ से चार रुपये उधार ले लिये थे। चार आना रुपया महीना पर चार रुपया कर्ज लिया था। शरीफ खानदानी मुसलमान भाई का ख़याल कर बबर अली ने एक रुपया माहवार की किश्त मान ली थी। आठ महीने में कर्ज अदा होना तय हुआ था। सात महीने फाका करके भी किसी तरह वे किश्त देते चले गये लेकिन जब सावन में बरसात और बाजरा भी रुपये का तीन सेर मिलने लगा, ऋण की किश्त देना संभव न रहा था। खान की किश्त

न दे सकने की हालत में अपने घर के दरवाजे पर फजीहत हो जाने की आशंका से चौधरी के रोयें खडे हो जाते। खान सात तारीख की शाम को ही आया। चौधरी पीरबक्श ने अल्लाह की कसम खाकर एक महीने की मुनाफी चाही और अगले महीने एक का सवा देने का वायदा कर लिया। खान ने मान लिया।

लेकिन अगले महीने भादों में हालत और भी परेशानी की हो गयी। बच्चों की माँ की तबीयत रोज-रोज गिरती ही जा रही थी। खाया-पिया उसके पेट में न ठहरता था। पथ्य केलिए उसे गेहूँ की रोटी देना ज़रुरी हो गया था। गेहूँ मुश्किल से मिलता था और रुपये का सिर्फ पौने दो सेर। बाज़ार में ताँबे का नाम ही नही रह गया था, नाहक इकन्नी जाती थी। चौधरी को चार रुपये महँगाई-भत्ते के भी मिले पर पेशगी लेते-लेते तनख्वाह के दिन केवल चार रुपये हिसाब में शेष निकले। उधर बच्चा पिछले हफ्ते में लगभग फाके से थे। चौधरी कभी गली से दो पैसे की चौराई खरीद लाते, कभी बाजरा उबाल सब लोग कटोरा-कटोरा भर पी लेते थे। बडी कठिनता से मिले चार रुपयों में से सवा रुपया खान के हाथ में धर देने की हिम्मत चौधरी को को न हुई। खान के भय से दिल डूब रहा था लेकिन दूसरी ओर चार भूखे बच्चों, उनकी माँ के दूध न उतर सकने के कारण सूख कर कॉटा हो रहे गोद में बच्चे और चलने-फिरने से लाचार अपनी माँ की भूख से बिलबिलाती सूरतें चौधरी की आँखों के सामने नाच जाती।

सात तारीख की शाम को असफल हो खान आठ की सुबह खूब तडके, चौधरी के मिल चले जाने से पूर्व अपना डण्डा हाथ में लिए दरवाजे पर मौजूद था। चौधरी ने खान साहब से यह बयान किया कि मिल के मालिक लालाजी चार रोज केलिए बाहर गये है। उनके दस्तखत के बिना किसी को भी तनख्वाह नही मिल सकी। तनख्वाह मिलते ही वह सवा रुपया हाजिर करेगा। तनख्वाह मिले हफ्ता भर नहीं हुआ था, मालिक ने पेशगी देने से साफ इनकार कर दिया। छठे दिन इतवार था। चौधरी जान-पहचान के कई आदमियों के यहाँ गये। कहीं से नहीं मिला। शाम के वक्त चौधरी के घर खान गाली देकर पुकारने लगा। पीरबक्श के शरीर में बिजली सी तडप गयी और वह बिलकुल निस्सत्व हो गये। दुबारा पुकारने पर चौधरी का शरीर निर्जीव-प्राय होकर भी निश्चेष्ट न रह सका। वे बाहर आ गये। खान आग-बबुला हो रहा था। एक से एक चढ़ती हुई तीन गालियाँ एक साथ खान के मुँह से पीरबक्श के पुरखों और पीरों के नाम निकल गयी। खान के घुटने छूकर, अपनी मुसीबत बता कर मुआफी केलिए खुशामद करने लगे। खान के ऊँचे स्वर से पडोस के लोग चौधरी के दरवाजे के सामने इकट्ठे हो गये थे। खान क्रोध में डण्डा फटकार

कर ड्योढी पर लटका दरी का परदा झटक लिया। ड्योढी से परदा हटने के साथ ही चौधरी के जीवन की डोर टुट गयी। वह डगमगा कर ज़मीन पर गिर पडे।

चौधरी में उस दृश्य को देख सकने की ताब न थी परन्तु वहाँ इकट्टे लोगों ने देखा घर की औरतें-लडकियाँ भय से कॉप रही थी, परदा हट जाने से ऐसे सिकुड गयी जैसे उनके शरीर का वस्त्र खींच लिया गया हो। असल में वह परदा घर भर की औरतों के शरीर का वस्त्र था। उनके शरीर पर बचे चीथडे उनके एक तिहाई अंग ढँकने में भी असमर्थ थे। उस नगनता की झलक से खान की कठोरता भी पिघल गयी । ग्लानि से थूक परदे को आँगन में वापिस फेंक निराशा एवं असफल लौट गया। वहाँ इकट्टे भीड भय से चीख कर भागती हुई औरतों पर दया करके दरवाजे के सामने से हट गयी ।चौधरी बेसुध पडे थे। जब उन्हें होश आया, ड्योढी का परदा आँगन में सामने पडा था, परन्तु उसे उठाकर फिर से लटका देने का सामर्थ्य उनमें शेष न था। शायद अब उसकी आवश्यकता भी न रही थी। परदा जिस भावना का अवलम्ब था वह मर चुकी थी।

4) पंचलाइट (फणीश्वरनाथ रेणु)

कथाकार - फणीश्वरनाथ रेणु

फणीश्वरनाथ रेणु अपनी पीढी के श्रेष्ठ कथाकारों में एक है। उनकी कहानियाँ आंचलिक परिवेश को लेकर लिखी गई है, जिनमें ग्रामीण जीवन का यथार्थ रूप सजीव हो उठा है। रेणु ग्राम्य जीवन के अद्‌भुत चित्रकार है। इस दृष्टि से वे प्रेमचन्द से कुछ आगे बढे हुए है। प्रेमचन्द की कहानी में शोषित एवं पददलित वर्ग के प्रति गहरी करुणा एवं सहानुभूति की और ग्राम्य जीवन की समस्याओं का सतही वर्णन हुआ है। लेकिन रेणु ने गावों के जीवन को लिया है। आंचलिक जीवन की मार्मिक अनुभूतियों को गहरी संवेदना के साथ परिवेश की समग्रता में रेणु ने अभिव्यक्त किया है, वहाँ पूरा अंचल अपनी बारीकियों के साथ हमारे सामने आता है। रेणु की कहानियों में आज़ादी के पश्चात् गावों में होनेवाले परिवर्तनों की सूक्ष्म झांकियाँ दृष्टिगोचर होती है। गावों के प्रति रेणु में गहरी तन्मयता एवं आस्था होते हुए भी उन्होंने गाँवों की वास्तविकता को तटस्थता के साथ चित्रण किया है और यह रेणु के कथा साहित्य की विशिष्टता कही जा सकती है।

रेणु ने अपनी कहानियों में बिहार के आंचलिक जीवन को सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया। ग्राम जीवन की आचार-व्यवहार, विश्वास परंपरायें, रीतिरिवाज, लोकगीत और जीवन की अनेक रुढियों को अंकित किया है। इसके साथ ही बदलाव की स्थिति में जीनेवाले गाँवों के बदलते रूप-रंग को, पारस्परिक संबन्धों, राजनैतिक प्रभावों आदि को नवीन चेतना के रूप में देखा है।

रेणु केलिए शिल्प साधन मात्र है। आँचलिकता धरातल की प्रत्येक धडकन, धरती की सौंधी गन्ध और उसके बिखरे रूप रंग की बारीकियों को रेणु ने इतने चित्रात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है कि उसकी मधुरता सहजता और रागात्मकता से पाठक अभिभूत हो उठता है।

आंचलिक जीवन को अभिव्यक्त करनेवाली भाषा रेणु के पास है। गाँवों से ली गई उनकी यथार्थ भाषा में देशज शब्दों का मिठास है और इस तरह लोकभाषा के रूप में रेणु ने नयी अर्थवत्ता की है।

हिंदी कथा साहित्य में रेणु प्रयोग, परम्परा और आधुनिकता केलिए चिरस्मरणीय नाम है। मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे आदि इनके उपन्यास है। तीसरी कसम, रसप्रिया, नित्य लीला, संवदिया, उच्चाटन, आत्मसाक्षी, अग्निखोर, जलवा आदि इनकी कहानियाँ है। रेणु ने अपनी कहानियों के द्वारा प्रेमचन्द की विरासत को पहली बार एक नयी पहचान और भंगिमा दी। बिहार के अररिया में 1921 में जन्म इस अप्रतिम कथाकार का निधन 1977 में हुआ।

कथावस्तु - पंचलाइट

पंचलाइट बडी सीधी ग्रामीण बोध की कहानी है। कहानी का आरंभ इस प्रकार होता है – "पिछले पन्द्रह महीने से दण्ड-जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स खरीदा है इस बार, रामनवमी के मेले में।" गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति की अलग अलग सभाचट्टी है। सभी पंचायतों में दरी, जाजिम सतरंजी और पेट्रोमेक्स है – पेट्रोमेक्स जिसे गाँववाले पंचलाइट कहते हैं। मेले से सभी पंच दिन-दहाडे ही गाँव लौटे, टोले भर के लोग जमा हो गये। औरत-मर्द, बूढे-बच्चे सभी काम-काज छोडकर पंचलाइट देखने दौडे आये। पंचलैट के सिवा और कोई गप नही, कोई दूसरी बात नही। रुदल साह बनिए की दूकान से तीन बोतल किरासन तेल आया और सवाल पैदा हुआ – पंचलाइट को जलाएगा कौन? यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आयी थी। गाँववालों ने आज तक कोई ऐसी चीज़ नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। यह बात नहीं कि गाँव भर में कोई पंचलाइट जलानेवाला नही। हरेक पंचायत में पंचलैट है उसके जलानेवाले जानकार है। लेकिन दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा तो जिन्दगी भर ताना सहना पडेगा। पंचायत की इज्जत का सवाल है। चारों ओर उदासी छा गई।

गुलरी काकी की बेटी मुनरी जानती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है। लेकिन गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बन्द है। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए।

मुनरी की माँ की फरियाद से ही पंचों ने एकमत होकर हुक्का-पानी बन्द किया है। मुनरी उसका नाम कैसे ले? उधर जाति का पानी उतर रहा है। मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली कनेली द्वारा सरदार से गोधन के बारे में कहा। जाति की इज्ज़त ही पानी में बही जा रही है। सरदार, दीवान समेत सब पंचों ने शावाशी दी। आखिर गुलरी काकी गोधन को मनाकर लायी।

गोधन चुपचाप पंचलैट में तेल भरने लगा। पंचलैट में पम्प देने लगा। पंचलैट की रेशमी थैली में धीरे-धीरे रोशनी आने लगी। गोधन कभी मुँह से फूँकता, कभी पंचलैट की चाबी घुमाता। थोडी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज निकलने लगी और रोशनी बढती गयी। लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बडा काबिल लडका है। गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनरी ने हसरतभरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुई। सरदार ने गोधन का सात खून माफ करने को तैयार हो जाते है। इतना ही नही मुनरी की माँ घर में खाने केलिए आमंत्रित किया। पंचलैट के प्रकाश में पेड-पौधों का पत्ता पुलकित हो रहा था।

विशेषताएँ :

फणीश्वरनाथ रेणु आँचलिक जीवन के रचनाकार है। कहानी पंचलाइट में भी ग्रामजीवन का असली चित्रण किया गया है। कहानी का कथ्य महतो टोली से घटित होता है। पंचलाइट टोली के अभिमान का प्रतीक है। पंचलाइट जलाने के साथ संबन्धों में होनेवाले परिवर्तन को भी यहाँ प्रकाश डालता है। पंचायत ने गोधन का बहिष्कार कर रखा है लेकिन वही गोधन आखिर पंचलाइट जलाके सबकी आँखों का तारा बन जाता है। पंचलाइट के आगमन के साथ पूरे गाँव के उत्सव वातावरण तथा बीच में घटित दुखद स्थिति एवं चरम सीमा पर लोगों की हाँसी-खुशी की झलक प्रकृति पर दिखाते हुए कहानी की शुभ परिसमाप्ति का वर्णन रोचक एवं सरल ढंग से किया है।

5) डिप्टी कलक्टरी (अमरकान्त)

कथाकार : अमरकान्त

अमरकान्त दरअसल एक ऐसे कहानीकार है जिन्होंने कहानी के वृत्तान्त को रेखाचित्रात्मक ढंग में ढालने का कौशल किया। पत्रकारिता के साथ ही उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी पदार्पण किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ में शमिल हुए और कथा-लेखन प्रारंभ किया। उनके कहानी संग्रह है – जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, कुहासा, तूफान, कला प्रेमी आदि। सूखा-पत्ता, आकाश पक्षी, काले उजले दिन, सुखजीवि, बीच की दीवार, ग्राम सेविका आदि उनके प्रमुख उपन्यास है। अमरकांत ने अपने कथानक जीवन के मामूली प्रसंगों में से चुने

है। साधारण व्यक्तियों की साधारण जीवन कथा लेखक की संवेदनशील दृष्टि पाकर असाधारण बन गई है।

अमरकान्त की प्रसिद्धि 'नयीकहानी' की प्रतिष्ठा के साथ ही हुई थी। आपने मुख्य रूप से निम्न मध्यर्वग के जीवन संदर्भों से अपनी कहानियों की सामग्री ली है। उनकी कहानियों का शिल्प बिलकुल सहज और स्वाभाविक है। स्थितियाँ एक के बाद एक सहज रुप में आती है और उनके माध्यम से कहानी की मूल संवेदना व्यंजित हो जाती है। आपकी भाषा जीवन-यथार्थ के अनुकूल होती है। इसलिए कहानी का कथ्य पाठक के मन पर सीधा प्रभाव डालता है।

कथावस्तु : डिप्टी कलक्टरी

डिप्टी कलक्टरी निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सपनों और उम्मीदों की कहानी है। कहानी का नायक शकलदीप बाबू कचहरी में मुख्तार हैं। उनका बडा लडका नारायण एक बेरोजगार युवक है। वह रोजगार केलिए हाथ पैर मार रहा है। पिछले तीन-चार साल से बहुत सी परीक्षाओं में बैठने, एम.एल.ए लोगों के दरवाज़ों के चक्कर लगाने के बावजूद उसको अब तक कोई नौकरी नहीं मिल सकी थी। दो बार डिप्टी कलक्टरी के इम्तिहान में भी वह बैठ चुका था, पर दुर्भाग्य! इम्तिहान का उएक ओर अवसर शेष है और उसे विश्वास था कि अब जगहें काफी है और वह जी-जान से परिश्रम करेगा।

शकलदीप बाबू को उम्मीद नहीं फिर भी वह डेढ सौ रुपये जुगाद करके भेजने जैसे दिये। नारायण ने उसी दिन डिप्टी कलक्टरी की फीस तथा फार्म भेज दिये। दूसरे दिन आदत के खिलाफ प्रात:काल शकलदीप बाबू की नींद उचट गयी। वह हडबडाकर आँखें मलते हुए उठ खडे हुए। घर के सभी लोग निद्रा में निमग्न थे। लेकिन बाहर के कमरे से धीमी रोशनी आ रही थी। उन्होंने देखा बेटा नारायण मेज पर रखी लालटेन के सामने सिर झुकाये ध्यान पूर्वक पढ रहा है। अचानक उनमें न मालूम कहाँ का उत्साह आ गया। उनकी आदत छह, साढे छह बजे के बाद उठने की थी। लेकिन वह उसी दिन से अपनी दिनचर्या को बदलती है। अपने पुत्र में शकलदीप बाबू भावी अफसर देखते हैं तो उसपर उनका वात्सल्य भाव और अधिक उमडता है। बेटे की अच्छे भोजन का इन्तजाम करने लगा, पहले वह नारायण के धूम्रपान के सख्त खिलाफ रहे थे लेकिन अब सिगरेट की भी व्यवस्था करने लगी। रोज सायंकाल घर से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित शिवजी के मन्दिर में भी जाने लगे थे। वे डिप्टी कलक्टरी के इम्मिहान की तैयारी में लगे अपने बेटे को हर तरह से सहयोग देने क कोशिश कर रहे हैं।

कचहरी से आने के बाद वह नारायण के कमरे को झाडते-बुहारते, उसका बिछौना लगाते, मेज-कुर्सियाँ सजाते और अंत में नाश्ता करके मन्दिर केलिए खाना हो जाते। मन्दिर में एक-डेढ घंटे तक रहते और लगभग दस बजे घर आते। पहले उन्हें नारायण के धूम्रपान से सख्त चिढ रही है और अब चुपके से सिगरेट की पैकेट भी उसके टेबल पर रख्र दिया करते है। बच्चों को उसके कमरे के आसपास भटकने नही देते। उसके लिए मेवा, मलाई लाकर चुपके से पत्नी को इस हिदायत के साथ देते कि किसी और को न दे।

आख्रिर परीक्षा के दिन आ गये। नारायण सबको प्रणाम कर स्टेशन को चल पडा। शकलदीप बाबू भी स्टेशन गये। जब ट्रेन चलने की घंटी बजी तो उसने नीचे उतरकर अपने पिता के पैर छुए। परीक्षा समाप्त होने के बाद नारायण घर वापस आया। उसने सचमुच पर्चे बहुत अच्छे किए थे और घरवालों से साफ कह दिया कि यदि कोई बेईमानी न हुई तो वह इंटर्व्यू में अवश्य बुलाया जाएगा। एक दिन उसके पास सूचना आयी कि उसको इलाहाबाद में प्रादेशिक लोक सेवा आयेग के समक्ष इंटर्व्यू केलिए उपस्थित होना है। समाचार बिजली की तरह सारे शहर में फैल गया। लोगों में आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

नारायण इंटर्व्यू देने गया और उसने इंटर्व्यू भी काफी अच्छा किया। अब शेकलदीप बाबू और भी व्यस्त रहने लगे। उनके सपने कुलांचे मारने लगते है। साक्षात्कार का परिणाम आने तक उनकी मानसिक हालत अजीब हो जाती है। उसकी भूख्र बढ जाती है और आधी रात में पत्नी को जगाकर खाने को माँगते है। इस बदपरहेजी तथा मानसिक तनाव का नतीजा यह निकला कि वह बीमार पड गये। उनको बुख्रार तथा दस्त आने लगे।

जिस दिन डिप्टी कलक्टरी का नतीजा निकला रविवार का दिन था। शकलदीप बाबू सबेरे रामायण का पाठ तथा नाश्ता करने के बाद मन्दिर चले गये। वह बहुत देर तक मन्दिर की सीढी पर बैठ गये। अन्त में भगवान के समक्ष दण्डवत कर बाहर निकले थे कि वहाँ के मास्टर जंगबहादुर सिंह ने बताया कि डिप्टी कलक्टरी का नतीजा निकल आया लेकिन नारायण का नाम जरा नीचे है। शकलदीप बाबू का चेहरा फक पड गया। उनके पैरों में जोर नही था और मालूम पडता था कि वह गिर जाएँगे। वह किसी तरह घर पहूँचा। सारे घर में मुर्दनी छाई हुई थी। उन्होंने अपने बेटे के कमरे में झाँककर देख्रा। बाहरवाला दरवाजा और ख्रिडकियाँ बन्द थी, परिणामस्वरूप कमरे में अँधेरा था। वे आगे बढकर गौर से देख्रा, तो चारपाई पर कोई व्यक्ति छाती पर दोनों हाथ बाँधे चित पडा था। वह नारायण ही था। वह धीरे से अंदर दाख्रिल हुए। उन्होंने नारायण को आँख्रें फाड-फाडकर गौर से देख्रा। उसकी आँख्रें बंद थी और वह चुपचाप

पडा हुआ था, लेकिन किसी प्रकार की आहट, किसी प्रकार का शब्द नही सुनाई दे रहा था। वे एकदम डर गये और काँपते हृदय से अपना बायाँ कान नारायण के मुख के बिल्कुल नजदीक कर दिया। और उस समय उनकी खुशी का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने अपने लडके की साँस को नियमित रूप से चलते पाया।

6) पिता (ज्ञानरंजन)

कथाकार : ज्ञानरंजन

ज्ञानरंजन सत्तर के दशक के कहानीकार है। सामान्य सी दिखनेवाली बात की तह में घुसकर तमाम विद्रूपताओं, उदासी, निरर्थकता आदि का पर्दाफाश करते हुए कहानी जगत में अपनी एक पहचान बनायी है। उनका रचना संसार सीमित है तो भी वे अपने अनुभवों को दोहराते नजर आते हैं। उनकी कहानियों के बारे में यह कहा जाना बिल्कुल सही है कि वे संबन्धों के कहानीकार हैं। इनकी कहानियाँ आजादी के बाद हुए सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तनों की और उन परिवर्तनों का व्यक्ति की संवेदना तथा व्यवहारगत संरचना पर पडे प्रभावों का विश्लेषण करनेवाली है। घंटा, पिता, बहिर्गमन, संबन्ध, शेष होते हुए आदि उनकी कहानियाँ है।

कथावस्तु : पिता

ज्ञानरंजन की कहानियाँ बदलते सामाजिक मूल्यों को पेश करती है। प्रस्तुत कहानी 'पिता' भी मूल्यों में परिवर्तन की कहानी है। रात की उमस में नींद न आनेवाले पुत्र के मन में अपने पिता के स्वभाव और खूबियों का स्मरण हो आता है। पूरी कहानी पिता के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। गर्मी का मौसम है। आज बेहद गर्मी है। रात को उसको नींद न लगी। उसने जम्हाई ली, तभी पिता की चारपाई बाहर चरमाई। वे किसी आहट से उठे होंगे। जब वह धूम-फिरकर लौट रहा था तो पिता अपना बिस्तर बाहर लगाकर बैठे थै। कनखी से उसने उन्हें अपनी गंजी से पीठ का पसीना रगडते हुए देखा और उसे लगा कि पिता को गर्मी की वजह से नींद न आ रही है। लेकिन उसे इस स्थिति से रोष हुआ। सब लोग पिता से अन्दर पंखे के नीचे सोने केलिए कहा करते है, पर वह जरा भी नहीं सुनते। कुछ देर पडे रहने के बाद वह उठा और उसने उत्सुकतावश खिडकी से झाँका। पिता उठकर घूमने लगते हैं, उँगली से माथे का पसीना काटकर जमीन पर चुवाने लगते हैं। गजब तो पिता की जिद है, वह दूसरे का अग्रह-उनुरोध न मानते हैं। पिता जीवन की अनिवार्य सुविधाओं से भी चिढते हैं। पहले लोग उनकी काफी चिरौरी किया करते थे, अब लोग हार गये है। आज तक किसी ने पिता को वाशबेसिन में मुँह-हाथ धोते नही देखा। बाहर जाकर बगिया वाले नल पर कुल्ला-दातुन करते हैं। फिर आँगन में तेल चुपडे बदन पर बाल्टी- बाल्टी पानी डालते हैं।

लडकों द्वारा बाजार से लाये बिस्कुट, महँगे फल पिता कुछ भी नहीं लेते। कभी लेते हैं तो बहुत नाक-भौं सिकोडकर उसके बेस्वाद होने की बात पर शुरु में ही जोर दे देते हुए। वह अपना हाथ-पाँव जानते हैं, अपना अर्जन और उसी में उन्हें संतोष है। 35 वर्षों से वे दो ही ग्रन्थ पढते आ रहे है रामायण और गीता।

पिता वैसे तो चुप रहते हैं, लेकिन जब बात-बहस में उन्हें खींचा जाता है तो काफी करारी और हिंसात्मक बात कह जाते हैं। उलटे, उन्हें घेरनेवाले हम भाई-बहन अपराधी बन जाते हैं। लोग मौका ढूँढने लगते हैं, पिता को किसी प्रकार अपने साथ की सुविधाओं में थोडा-बहुत शामिल कर सकें। पर ऐसा नहीं हो पाता। बच्चे पिता की आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान तथा सादगी को उनका बज्र अहंकार मानते हैं। पिता अद्‌भुत और विचित्र हैं। बाहर रहकर बाहरी होते जा रहे हैं। घर के अन्दरुनी हिस्सों में लोग आराम से रहे या बहू-बेटियों के निजी जीवन को स्वच्छन्द रहने देने केलिए अपना अधिकांश समय बाहर व्यतीत किया करते हैं। उसे पिता के बूढेपन का खयाल आने पर सिहरन हुई। उसके आँखों में हलका जल लगने लगा।

पिता लगातार विजयी हैं। कठोर है तो क्या उन्होंने पुत्रों के सामने अपने को कभी पसारा नहीं। उसे लगा पिता एक बुलन्द भीमकाय दरवाजे की तरह खडे हैं, जिससे टकरा-टकराकर हम सब निहायत पिद्दी और दयनीय होते जा रहे हैं। उसने चाहा कि वह खिडकी से पिता को अन्दर आकर सोए रहने केलिए आग्रहपूर्वक कहे, लेकिन वह ऐसा नही कर सका। वह असन्तोष और सहानुभूति दोनों के बीच असन्तुलित भटकता रहा। शायद पिता औंध गये हैं। करवट बदलने से उत्पन्न होने वाली खाट की चरमराहट, लाठी की पटक कुछ भी सुन नहीं पड रहा है। पिता सो गये होंगे, इस विचार से उसे परम शान्ति मिली और वह नींद में चित हो गया।

थोडे समय उपरान्त वह एकाएक उचककर उठ बैठा। कुछ क्षणों तक अँधेरे को घूरा। उसे शरीर में एकाएक बहुत गर्मी सी लगी। उठकर उसने दो-तीन कुल्ले किए और ढेर सारा ठंडा पानी पिया। उसने इतमीनान केलिए खिडकी के बाहर देखा पिता सोये नहीं , अथवा कुछ सोकर पुनः जगे हुए है। शायद उन्हें इतमीनान है कि घर में सभी लोग निश्चिंत रूप से सो रहे हैं।

चारों तरफ धूमिल चाँदनी फैलने लगी है। सुबह जो दूर के भ्रम में पश्चिम से पूर्व की ओर कौवे काँव-काँव करते उडे। वह खिडकी से हटकर बिस्तर पर आया। अन्दर हवा वैसे ही लू की तरह गरम है। दूसरे कमरे स्तब्ध हैं। पता नही बाहर कैसी उमस और बेचैनी होगी । वह जागते हुए सोचने लगा, अब पिता निश्चित रूप से सो गये हैं शायद।

विशेषताएँ :

इस कहानी में एक सुगठित कथा नही है। गर्मी से बेचैन कर देनेवाली रात में पुत्र के मन में अपने पिता के अद्भुत व्यवहार एवं उनकी गर्वीली आदतों का याद हो आता है। तमाम कष्टों के बावजूद वे किसी के द्वारा उपलब्ध करायी गयी सुविधा लेना नकार देते हैं। यह विडंबना ही है कि सबके लिए सुविधाएं जुटाने वाले पिता खुद उसमें शामिल नहीं होते या फिर कम से कम शामिल होते हैं। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि कहानी पिता और परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। पिता आद्यंत कहानी का मेरुदंड है। अतः 'पिता' नाम सार्थक बन पडा है। यह कहानी पिता-पुत्र संबन्धों पर एक नये ढंग से सोचने-विचारने को प्रेरित करती है। पिता बार-बार बच्चों को मान देते हैं। उनके द्वारा दी गई सुविधाओं को नकारकर वास्तव में पिता की भूमिका को पूरे परिवार को एक सूत्र में रखने की जिम्मेदारी को वे खूब निबाह रहे हैं। लेकिन बच्चे इसे उनका अहं समझ रहे हैं। कहानी में परिवेश या घटना रात भर की है लेकिन पिता का समस्त जीवन यहाँ जीवन्त हो उठा है।

7) नेलकटर (उदयप्रकाश)

कहानीकार : उदयप्रकाश

दरियाई घोडा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरीवाली लडकी, दत्तात्रेय का दुःख, मेंगोसिल आदि कहानी संग्रहों के कारण उदयप्रकाश सबसे अधिक चर्चित समकालीन कहानीकार है। अत्यधिक चर्चा का कारण एक तो उनका जादुई यथार्थ का शिल्प रहा, जिसमें उन्होंने स्वप्न और यथार्थ का मिश्रण करके फंतासी की रचना की। उन्होंने अपने इस शिल्प के माध्यम से नवपूंजीवाद और भूमंडलीकरण से उत्पन्न विडंबनाओं और आधुनिक जीवन के अंतर्विरोधों को अभिव्यक्ति दी जिसके लिए उन्होंने अपने आसपास के सुपरिचित व्यक्तियों को पात्र बनाया। उदयप्रकाश सिनेमा और टेलिविजन केलिए लेखन कर रहे हैं बऔर कुछ समय तक 'संडे मेल' में वरिष्ठ सहायक संपादक रहे। साहित्यकार के रूप में उनकी कविताओं और कहानियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। उनकी प्रकाशित काव्य संग्रह है- सुनो कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम। ईश्वर की आँख उनका निबन्ध संग्रह है।

कथावस्तु : नेलकटर

उदयप्रकाश की सबसे छोटी कहानी है 'नेलकटर'। इसमें मरणासन्न माँ के प्रति किशोर पुत्र के प्रेम की कहानी है। जब वह नौ साल का था उसकी माँ कैंसर से पीडित अपनी मृत्यू की ओर बढ रही है। बम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल से उन्हें ले आया गया था। माँ दक्षिण की ओर के कमरे में रहती थी। सिर्फ अनार का रस पीती थी। उनके गले में एक ट्यूब लगी थी, उसीसे वे

साँस लेती थी। माँ को बोलने में दर्द बहुत होता होगा, इसलिए कम ही बोलती थीं। उस यंत्र जैसी आवाज में वह माँ की अपनी पुरानी आवाज खोजने की कोशिश करते। कभी-कभी उस असली माँ और माँ जैसी आवाज का कोई एक अंश उसे सुनाई पड जाता। तब माँ उसे मिलती, जो उसकी छोटी सी स्मृति में होती थी। लेकिन माँ सब कुछ सुनना चाहती थी। जब वे बोलते, लडते, चिल्लाने या किसी को पुकारते तो व्याकुलता से वे सुनतीं। उनके शब्द उन्हें राहत देते होंगे।

उनकी सिर्फ आँखे बची थी जिन्हें देखकर मुझे उम्मीद बँधती थी कि माँ कहीं जाएँगी नहीं। वह हमेशा केलिए उनकी उपस्थिति चाहता था। कभी-कभी वह बहुत डर जाता था और रोता था। उसे अपने जीवन में एक बहुत खाली जगह दिख जाती थी।

एक दिन माँ ने उसे बुलाकर अपनी हथेली उसके सामने फैला दी। उनकी उँगलियाँ बहुत पतली हो गयी थी। उनमें रक्त नहीं था। पीली-सी त्वचा और बेहद ठंडी वह समझ गया और नेलकटर ला कर माँ की पलँग के नीचे फर्श पर बैठ गया। नेलकटर में लगी रेती से उनकी उँगली का नाखून घिस कर बराबर करना था। वह नेलकटर दो साल पहले पिताजी कुम्भ के मेले से लौटने पर इलाहाबाद से लाये थे। उसने माँ की हथेली थाम रखी। और नाखून को रेती से धीरे-धीरे घिस रहा था। माँ को नाखून का हलका-हलका रेती से घिसा जाना बहुत अच्छा लग रहा है। उसने उनकी सारी उँगलियों के नाखून खूब अच्छे कर दिये।

माँ ने उसके बालों को छुआ और कुछ बोलना चाहा। लेकिन उसने रोक दिया। वे बोलती तो पूछती कि सिर से क्यों नही नहाता? बालों में साबुन क्यों नही लगाता? इतनी धूल क्यों है ? आदि। एक बार हंसा। फिर मुस्कुराता ही रहा। माँ को ढाढस बँधाने और उन्हें खुश करने का यह उसका तरीका था।

अगले दिन सुबह पाँच बजे आँगन में पाँच औरतें रो रही थी। यह रोना नही था, विलाप था, पता चला माँ रात में नींद में ही खत्म हो गयी। फिर कभी उसने उनके घिसे हुए नाखून नही देखे और वह नेलकटर भी कहीं खो गया। वह किसी बहुत ही आसान-सी जगह पर रखा हुआ हो और सिर्फ उसके भूल जाने के कारण वह मिल नहीं पा रहा हो। कई वर्षों बाद जब वह बडा हो चुका है फिर भी अक्सर उस नेलकटर को खोजने लगता है। क्योंकि चीजें कभी खोती नही है, वे तो रहती ही हैं। अपने पूरे अस्तित्व और वज़न के साथ। सिर्फ हम उनकी वह जगह भूल जाते हैं।

विशेषतायें

वास्तव में कहानी 'नेलकटर' संबन्धों में संवेदना तलाशने की प्रतीकात्मक कहानी है। आज हम बौद्धिक व औपचारिक रूप से संबन्धों को बस निभाते भर हैं। ऐसे में संबन्धों और समीकरणों में

फर्क करना कठिन हो जाता है। कैंसर पीडित माँ के नाखून काटने वाला कथावाचक उस नेलकटर को आज भी खोज रहा है जब वह बडा हो चुका है। उसे नेलकटर नही मिलता। असल में यह नेलकटर की नही उस संवेदना की खोज है जो हम आज की भागदौड भरी जिन्दगी में भूल चुके हैं। संबन्धों में वह भावना नही रही जो हमारी किशोरावस्था में थी क्योंकि तब हम संवेदनात्मक धरातल पर संबन्धों को महसूस करते थे, जीते थे। नेलकटर रोजमर्रा काम में अपनेवाली वस्तु है किन्तु माँ के साथ जुडकर वह भी उतना ही जरुरी हो जाता है जितनी माँ की स्मृति। कहानी की अन्तिम पंक्तियाँ कहानी के उद्देश्य तथा भूली संवेदना का अर्थें स्पष्ट कर देती है। संबन्धों की ऊष्मा, संवेदना तथा भावना खोई नहीं है बल्कि हम उनकी जगह भूल गये हैं।

8) स्वीमिंग पूल (अज़गर वजाहत)

कहानीकार : अज़गर वजाहत

अज़गर बजाहत का जन्म 1946 में कनेहपुरख़ उत्तरप्रदेश में हुआ। उन्होंने हिंदी कहानी, नाटक, उपन्यास तथा लघु कथायें लिखी है। साथ ही फिल्मों और धारावाहिकों केलिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया है। उनकी प्रमुख रचनायें है – दिल्ली पहूँचना है, स्वीमिंग पूल, मैं हिंदु हूँ, अधि बनी (कहानी संग्रह), जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ नइ , फिरंगी लौट आए, समिधा, वीरगति(नाटक), सबसे सस्ता गोस्त(नुक्कड), रात में जानेवाले, दोपहर तथा सात आसमान, कैसी आगि लगाई (उपन्यास)। सम्प्रति वे दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में प्रुसर के पद पर कार्यरत है।

कथावस्तु : स्वीमिंग पूल

स्वीमिंग पूल गैरजिम्मेदार और भ्रष्ट होती राजनीति का विद्रूप चेहरा दिखानेवाली एक छोटी-सी कहानी है। कथावाचक की पत्नी किसी एक वी.आई.पी से बातें किए जा रही है। कथावाचक पत्नी से खामोश रहने का इशारा करना चाहता है लेकिन उसके साथ कुछ दूसरे अतिथि खडे होने से पत्नी और वी.आई.पी की तरफ नहीं जा सकता था। आखिर जब वह पहूँचा तो पत्नी धाराप्रवाह वी.आई.पी से 'उसीके' बारे में बात कर रही थी। जब वह उसे खामोश रहने को कहा तो भी वह वी.आई.पी से 'उसके' बारे बाते कर रही हैं। असल में वह वी.आई.पी से अपने घर के सामने के गन्दे नाले की शिकायत कर रही है। लेखक नहीं चाहता कि वी.आई.पी को यह छोटा काम बताया जाए। क्योंकि वे लोग सैकडों बार शिकायतें दर्ज कराई है लेकिन नाला साफ कभी नहीं हुआ। उसमें से बदबू आना कम नही हुई। वे लोग शिकायत करते-करते थक गये।

सब जानते है कि इसके बारे में उपराज्यपाल को दो रजिस्टर्ड पत्र जा चुके हैं, महानगर पालिका के दफ्तर में पत्र भेजे-भेजे उनकी फाइल इतनी मोटी हो गयी कि आदमी से उठाए नही जा सकती।

वी.आइ.पी को घर बुलाने से पहले ही लेखक अपनी पत्नी को समझाया था कि नाला-वाला छोटी चीजें है, ये काम उनके यहाँ आने की खबर फैलते ही अपने आप हो जाएगा। लेकिन पत्नी सब भूल चुकी थी। आखिर वी.आई.पी आश्वासन देता है किन्तु वह मात्र आश्वासन साबित होता है।

वी.आई.पी के आश्वासन के बाद वे लोग इतने आश्वस्त थे कि एक-दो महीने उन्होंने नाले के बारे में सोचा ही नही, उधर देखा ही नही। धीरे-धीरे नाला हमारी बातचीत से बाहर हो गया। कुछ महीने गुजर गये तो पत्नी ने महानगर पालिका को फोन किया। वहाँ से उत्तर मिला कि नाला साफ किय जाएगा। फिर कुछ महीने गुजरे, नाला वैसे का वैसा ही रहा। पत्नी ने वी.आई.पी के ऑफिस फोन किए परन्तु सम्पर्क हो ही नहीं सका।

यहीं से कहानी प्रतीकात्मक मोड ले लेती है। अचानक उस नाले में लोग फूल, किताबें, चिडियों के घोंसले, जड से उखडे पेड, और कीमती चीजें तैरती बहती दिखने लगे। एक दिन वह रात घर आया तो पत्नी बहुत घबराई हुई लग रही थी। उसने कहा आज वह वी.आई.पी को नाले में तैरते देखा और वे ऐसे खुश है जैसे स्वीमिंग पूल में किलकारियाँ मारकर तैर रहा है।

विशेषताएँ

कहानी स्वीमिंग पूल गैरजिम्मेदार और भ्रष्ट होती राजनीति का विद्रूप चेहरा दिखाती है। आम-आदमी की सुविधा पर सत्ताधारी वर्ग का जीवन फल-फूल रहा है। कहानीकार राजनैतिक चरित्र और भ्रष्ट व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करता है। चरम सीमा तक पहूँचते-पहूँचते कहानी नये मोड लेती है। यहीं से कहानीकार प्रतीकों द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्ट व्यवस्था एवं व्यवहार का चित्र व्यग्य द्वारा चित्रित किया है। नाला स्वीमिंग पूल नही है किन्तु जिसे हम साफ-सुथरी दुनिया कहते है, वह गन्दे नाले की तरह है। हम उस गन्दे नाले को स्वीमिंग पूल समझकर तैर रहे है। गन्दे नाले का साफ न होना उच्चाधिकारियों की समृद्धि का रूप बन जाता है।

MODULE - 3

हिंदी उपन्यास का उद्‌भव और विकास

आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी उपन्यास के विकास का श्रेय अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों को दिया जा सकता है, क्योंकि हिंदी में इस विधा का श्रीगणेश अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ। हिंदी उपन्यास-परम्परा में उपन्यासकार सम्राट्र मुंशी प्रेमचन्द एक ऐसे केन्द्रबिन्दु है, जिनके नाम पर हिंदी उपन्यासों की विकास परम्परा को तीन भागों पर विभाजित किया है – पूर्व प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्द युग और प्रेमचन्द्रोत्तर युग।

पूर्व प्रेमचन्द युगः

भारतेन्दु ने आधुनिक हिंदी साहित्य के सभी अंगों में अभिवृद्धि करने केलिए महत्वपूर्ण योग दिया है। उन्होंने एक उपन्यास लिखन आरंभ किया, किन्तु वह पूर्ण न हो सका। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'पूर्ण प्रकाश और चन्द्रप्रभा' नामक उपन्यास का अनुवाद किया था। हिंदी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु' है। इस रचना में दिल्ली के एक सेठ पुत्र की कहानी है। इसमें उपदेशात्मकता की प्रवृत्ति प्रधान है।

इस काल में सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रेम-साधना एवं तिलस्मी तथा ऐयारीपूर्ण कई प्रकार के उपन्यास लिखे गये। रत्नचन्द प्लीडर का 'नूतन चरित', बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान', राधाकृष्णदास का 'निःसहाय हिंदु' राधचरण गोस्वामी का 'लवंग लता' और कुसुम कुमारी बालमुकुन्द गुप्त का 'कामिनी' आदि सामाजिक उपन्यास उल्लेखनीय है।

किशोरीलाल गोस्वामी, ब्रजनन्दन सहाय, बलदेव प्रसाद मिश्र तथा कृष्णप्रकाश सिंह अखीरी आदि अनेक लेखकों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे जिनमें इतिहास नाम मात्र को है। इन पर तिलस्मी उपन्यासों का प्रभाव है। ब्रजनन्दन सहाय के 'लाल चीन' तथा मिश्रबन्धुओं के 'वीरमणि' को ऐतिहासिकता तथा उपन्यास-कला की दृष्टि से थोडा-सा सफल कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त किशोरीलाल गोस्वामी, जगन्नाथ मिश्र और काशीप्रसाद आदि अनेक लेखकों ने प्रेमाख्यानक उपन्यास लिखे जिनमें प्रेम का रूढिबद्ध वर्णन है। इन उपन्यासों का उनुवाद-कार्य भी बराबर चलता रहा। प्रतापनारायण मिश्र और राधाचरण गोस्वामी ने बंगला के कई उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया।

इस काल में मौलिक उपन्यास लेखकों में देवकीनन्दन खत्री तथा गोपालराम गहमरी और किशोरीलाल गोस्वामी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। देवकीनन्दन खत्री तथा गोपालराम गहमरी के तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों ने हिंदी जगत् में धूम मचा दी। इनके अनुकरण पर देवीप्रसाद वर्मा, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदि आदि अनेक लेखकों ने जासूसी उपन्यासों का एक ताँता बाँध दिया। खत्री जी के 'चन्द्रकांता संतति' लोकप्रिय है।

द्विवेदियुग, औपन्यासिक विकास की दृष्टि से कोई विशेष महत्व नही रखता। इस काल में अधिकतर अन्य भाषाओं के उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद हुआ। इस समय लिखे गये मौलिक उपन्यासों की संख्या बहुत कम है। अयोध्यासिंह उपाध्याय, लज्जाराम मेहता तथा ब्रजनन्दन सहाय ने कतिपय मौलिक उपन्यास लिखे। अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने 'ठेठ हिंदी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूला' उपन्यास लिखे मेहता के आदर्श हिंदू और हिंदू गृहस्थ सुधरवादी सामाजिक उपन्यास है।

इस युग के उपन्यासों में औपन्यासिक कलात्मकता का अभाव है। इस युग के उपन्यासों की मूल मनोवृत्तियाँ हिंदू पुनरुद्धानवाद, मनोरंजन प्रियता, तिलस्मी ऐयारी, जासूसी आदि है।

प्रेमचन्द युग :

प्रेमचन्द के आगमन से हिंदी उपन्यास में एक नया मोड आता है। वस्तुतः वे हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यासकार तथा युग-प्रवर्त्तक है। उनके उपन्यासों में विशाल जनजीवन और विशेषतः भारत के किसार और मध्यवर्गीय जीवन की अनेकमुखी समस्याएँ कलात्मक रूप से चित्रित हुई है।

प्रेमचन्द ने दो प्रकार के उपन्यास लिखे है - राजनीतिक और सामाजिक। इनमें समग्र रूप से भारतीय जीवन की बहुमुखी समस्याएँ चित्रित की है। उनके 'प्रेमा' और 'वरदान' उन दिनों के उपन्यास है जब वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखा करते थे। 'सेवासदन' उनका प्रथम हिंदी उपन्यास है। दहेजप्रथा, अन्मेल विवाह, वेश्यावृत्ति आदि समस्याओं के चित्रण इसमें हुआ है। 'प्रेमाश्रम' में ग्राम्य जीवन की समस्याओं का विशाल चित्रण है। 'रंगभूमि' इनका सबसे बडा उपन्यास है और इसमें शासक वर्ग के अन्याचारों की समस्या है। 'कर्मभूमि', एक राजनीतिक उपन्यास है और 'प्रतिज्ञा' विधवा विवाह से संबन्धित है। इसके अतिरिक्त गबन, गोदान, निर्मला, कायाकल्प आदि प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास है।

प्रेमचन्द युग में अन्य अनेक प्रतिभाओं का भी उदय हुआ जैसे – जयशंकर प्रसाद कृत 'कंकाल', तितली', 'इरावती', शिवपूजन सहाय का 'देहाती दुनिया', चतुरसेन शास्त्री कृत 'परख', 'हृदय की प्यास', 'अमर अभिलाषा', विश्वंभरनाथ कौशिक का 'माँ भिखारिणी', बेचन शर्मा उग्र कृत 'दिल्ली का दलाल', 'चंद हसीनों के खतूत', प्रताप नारायण श्रीवास्तव कृत 'विदा', 'विकास', वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा रचित 'विराटा की पद्मिनी', 'मृगनयनी', 'महारानी लक्ष्मीबाई' आदि, जैनेन्द्रकुमार के 'परख', 'सुनीता कल्याणी' आदि, इलाचन्द जोशी के 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया', 'संन्यासी' आदि। भगवतीप्रसाद वाजपेयी, ऋषभचरण जैन, श्रीवास्तव, सुदर्शन, निराला आदि और भी प्रसिद्ध अनेक उपन्यासकार इस युग में हुए।

प्रेमचन्दोत्तर युग :

जिसप्रकार छायावादोत्तर युग में कविता क्षेत्र में कुछ नवीन प्रवृत्तियाँ जन्मी उसी प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में भी नवीन प्रवृत्तियों का समावेश हुआ। प्रेमचन्द के बाद का उपन्यास साहित्य निश्चित रूप से उच्च है और बाह्य शिल्पविधान की दृष्टि से भी कुछ आगे है, किन्तु इसमें वह गहराई नहीं है जो कि प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में। प्रेमचन्दोत्तर कालीन लेखकों की रचनाओं को एक निश्चित प्रवृत्ति के अन्तर्गत रखना यद्दपि कठिन व्यापार है परन्तु अध्ययन की सुविधा केलिए उन्हें प्रवृत्यात्मक वर्गों में विभाजित करके इस विकास परम्परा को समझना अपेक्षाकृत सुकर रहेगा।

सामाजिक उपन्यास

प्रसाद और कौशिक के अतिरिक्त सामाजिक समस्याओं पर लिखनेवाले उपन्यासकारों में उग्र, चतुरसेन शास्त्रि , उपेन्द्रनाथ अश्क आदि के नाम प्रमुख है। प्रसाद के समान उग्र में भी एक विलक्षण विरोधाभास के दर्शन होते है। इन्होंने सामाजिक सुधार के नाम पर यथार्थवाद की आड में वर्जित विषयों पर लिखकर बीभत्स अश्लीलता का चित्रण किया है। बुधुआ की बेटी, आपकी सबसे अच्छी कृति है। चतुरसेन शास्त्री ने अपने उपन्यासों में मनुष्य की नीचता, दुराचार आदि का चित्रण किया है। हृदय की प्यास उनके प्रमुख उपन्यास है। अश्क जी का सितारों का खेल, गिरती दीवारें, गरम राख, बडी बडी आखें, पत्थर अल पत्थर आदि भी सामाजिक उपन्यास है।

सामाजिक उपन्यासकारों में प्रसिद्ध है भगवतीचरण वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, अमृतलाल नागर, उदयशंकर भट्ट सियाराम शरण गुप्त, सेठ गोविन्ददास, विष्णु प्रभाकर आदि। चित्रलेखा, पतन, तीन वर्ष, टेढे मेढे रास्ते, आखिरी दाँव, भूले बिसरे चित्र, रेख, सीधी सच्ची

बातें, सबहि नचावत राम गोसाई आदि भगवतीचरण वर्मा की कृतियाँ है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी के उपन्यास है चलते-चलते, निमंत्रण यथार्थ के आगे, टूटा टी सेट, विश्वास का बल, सपना बिक गया, सूनी हार। अमृतलाल नागर का भी सामाजिक उपन्यासकारों में महत्वपूर्ण स्थान है। बूँद और समुद्र उनके बहुचर्चित उपन्यास है। सामाजिक उपन्यास परंपरा को समृद्ध बननेवालों में एक है उदयशंकर भट्ट उनके उपन्यास है 'सागर,लहरें और मनुष्य', डॉ. शेफाली, शेष-अशेष तथा लोक-परलोक। सियाराम शरण गुप्त के गोद, अन्तिम आकांक्षा और नारी, रामेश्वर शुक्ल अंचल के उलका और मरुद्वीप, सेठ गोविन्ददास के इन्दुमती आचार्य चतुरसेन के धर्मपुत्र, खग्रास, गोली, विष्णु प्रभाकर के निशिकांन्त और तट के बन्ध आदि भी सामाजिक उपन्यास है।

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास

उपन्यास साहित्य में जैनेन्द्रकुमार को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति में बडी सफलता मिली है। बाबू गुलाबराय जी ने इस श्रेणी के उपन्यासों की विशेषतायें निरुपित करते हुए कहा है आधुनिक उपन्यासों में मनुष्य के वैयक्तिक इतिहास के आधार पर इसके अवचेतन मन की कुंजी से उसके चारित्रित रहस्यों का उद्‌घाटन किया जाता है। इन उपन्यासों में बाह्य-संघर्ष ने व्यक्ति के अन्तः संघर्ष का स्थान ले लिया और उपन्यासकार अनुभूति व कल्पना के बल पर व्यक्ति मानस में होनेवाले संघर्षों उसके अवचेतन तथा अचेतन की परतें उखाड चीर-फाड करने लगा है। इस दिशा में फ्रायड, युँग, एडलर आदि के सिद्धान्त तथा मान्यतायें उसकी पथ प्रदर्शन बनी। वह मनोविश्लेषण की नाना प्रणालियों के आश्रय से व्यक्ति-मानस की गहराइयों को नापने लगा। इस धारा के प्रमुख उपन्यासकार है – जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, डॉ. देवराज आदि।

इलाचन्द्र जोशी के लगभग सारी उपन्यास फ्रायड के मनोविलेषण विज्ञान के सिद्धान्त पर आधारित है। इनके प्रेत और छाया, संन्यासी और पर्दे की रानी आदि उपन्यासों में व्यक्ति की दमित वासना और अर्थचेतन की कथायें भरी पडी है। अज्ञेय जी पर फ्रायड, टी.एस. इलियट का प्रभाव है। इनके शेखरः एक जीवनी और नदी के द्वीप इन दोनों में अत्यंत जटिल, सूक्ष्म और गंभीर शैली में यौन-प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। इनके अपने-अपने अजनबी अस्तित्ववादी दर्शन का गहरा प्रभाव है। जैनेन्द्र संभवतः प्रेमचन्द के पश्चात् हिंदी के एक सफल कृति लेखक है। उन्होंने अपने उपन्यासों का विषय नागरीक जीवन की मनोविज्ञानिक समस्याओं का चित्रण किया है। इनके उपन्यासों में आत्मपीडन की अधिकता है। इनका परख, सुनीता, त्यागपत्र और कल्याणी

में नारी-पुरूष के प्रेम की समस्या का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण किया गया है। इनके उपन्यासों में जीवन के कतिपय मौलिक प्रश्न है जो आज के मानव केलिए विचारणीय है। डॉ. ऱ्वराज के पथ की खोज, बाहर-भीतर, रोडे और पत्थर तथा अजय की डायरी आदि में शिक्षित मध्यवर्ग के करुण यथार्थ का मनोवैज्ञानिक चित्रण है। इस धारा के रचनाओं में धर्मवीर भारती के गुनाहों की देवता, सूरज का सातवाँ घोडा, प्रभाकर माचवे के परन्तु, 'द्वाभा' तथा 'साँचा', नरेश मेहता का डूबते मस्तूल, डॉ. रघुवंश का 'तंतुजाल', सवैश्वरदयाल सक्सेना का 'सोया हुआ जल', अग्रवाल का लौटती लहरों की बांसुरी और निर्मलवर्मा का 'वे दिन' उल्लेखनीय है।

मार्क्सवादी या साम्यवादी उपन्यास :

वर्तमान काल में उपन्यासकारों का एक वर्ग विदेशी साहित्य की साम्यवादी धारा को लेकर चल रहा है। इसमें सर्वप्रथम प्रयत्न करनेवालों में यश्पाल प्रमुख है। राहुलजी इसी धारा के लेखक है। इस धारा के अन्य लेखकों में रांगेय राघव, उपेन्द्रनाथ अश्क, नागार्जुन, अमृतलाल नागर इत्यादि मुख्य है। इन सभी साहित्यकारों में सामाजिक विषमता, दरिद्रता एवं वर्गसंघर्ष के भाव मनोविश्लेषणवाद की धारा से समन्वित होकर व्यक्त हुए है। इन्होंने जातिगत, धर्मगत रूढियों एवं अंधविश्वासों पर तीव्र व्यंग्य किया है।

राहुल सांकृत्यायन के सिंह सेनापति, वोल्गा से गंगा तक, यशपाल के दादा कामरेड, देशद्रोही, पार्टी कामरेड आदि इस कोटि में आते हैं। यशपाल के उपन्यासों में युग-जीवन के संघर्ष का वर्णन है। नागार्जून के प्रमुख उपन्यास है रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरूण के बेटे तथा दुख्र मोचन। रांगेय राघव के घरौंदा, सीधा सादा रास्ता, विषाद मठ हुजुर और कब तक पुकारूँ आदि। इनके साम्यवादी उपन्यासों में वर्ग- वैषम्य और आर्थिक शोषण मुख्य विषय है। भैरव प्रसाद गुप्त के मशाल, गंगा मैया, सत्ती मैया का चौरा नामक उपन्यासों में मार्क्सवादी सिद्धान्तों के आधार पर वर्ग-संघर्ष का चित्रण है। अमृतराय के उपन्यासों - बीज, नागफनी का देश और हाथी के दांत' में साम्यवादी चेतना है। धरती की आँखें, रूपाजीवा आदि लक्ष्मीनारायण लाल के उपन्यास है। राजेन्द्र यादव के प्रेत बोलते है, उखडे हुए लोग, कुलटा, शह और मात तथा मुखर चिंतन आदि उपन्यास उपलब्ध है।

ऐतिहासिक उपन्यास :

हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा भारतेन्दु युग से मिलती है। प्रारम्भिक ऐतितहासिक उपन्यासों में मुगल काल को चित्रण हुआ है। आगे चलकर वृन्दावनलाल वर्मा ने तो

इस धारा को चरमोत्कर्ष पर पहूँचा दिया। इस क्षेत्र में वृन्दावनलाल वर्मा, निराला, सांकृत्यायन, हजारीप्रसाद द्विवेदी और आचार्य चतुरसेने का नाम उल्लेखनीय है। वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में कल्पना और इतिहास का समुचित मिश्रण किया है। उनके उपन्यासों में बुन्देलखंड, झाँसी, ग्वालियार आदि स्थानों का इतिहास एवं चिर-परिचित ऐतिहासिक पात्र लेकर कथानक का संयोजन मिलता है। वर्माजी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं, रोमांस आदि का उद्‌घाटन किया है। उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है 'गढ कुण्डार', 'विराटा की पद्मिनी', 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'कचनार', 'मृगनयनी' और 'मूसाहिबजू'।

उनके अतिरिक्त चतुरसेन शास्त्री एवं हजारीप्रसाद द्विवेदी का नाम इस वर्ग में लिया जा सकता है। आचार्य हजारीप्रसाद जी ने 'बाणभट्‌ट की आत्मकथा', 'चारु चन्द्रलेखा', 'पुनर्नवा' और 'अब रैक्व आख्यान' ने इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय करते हुए रोचक उपन्यासों की रचना की है। इन उपन्यासों में ऐतिहासिक वातावरण की सुन्दर प्रस्तुति हुई है। राहुल सांकृत्यान के 'सिंह सेनापति' और 'जय यौधेय' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे तथा रांगेय राघव ने 'मुर्दों का टीला' नामक ऐतिहासिक उपन्यास में मोहनजोदड़ो के गणतन्त्र का चित्रण किया है।

आंचलिक उपन्यास

स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में आंचलिक उपन्यास एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। वे उपन्यास जिनमें किसी विशेष अंचल का चित्रण कथानक के द्वारा किया जाता है, इस वर्ग में आते हैं। हिंदी के आंचलिक उपन्यासकारों में सर्वप्रमुख हैं - फणीश्वरनाथ रेणु जिन्होंने 'मैला आंचल' तथा 'परती परिकथा' नामक उपन्यासों में बिहार के ग्रामीण अंचल के रहन-सहन, रीति-रिवाज, राजनीतिक आस्थाओं, आदि का विशाद चित्रण किया है। रेणु के अतिरिक्त अन्य आंचलिक उपन्यासकार हैं – नागार्जुन (रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन, वरुण के बेटे), उदयशंकर भट्‌ट (सागर लहरें और मनुष्य), रांगेय राघव (कब तक पुकारूं), आदि।

ग्रामीण परिवेश को आधार बनाकर भी कुछ उपन्यास लिखे गए हैं। इनमें प्रमुख हैं - आधा गांव (राही मासूम राजा), अलग-अलग वैतरणी (शिवप्राद सिंह), जंगल के फूल (राजेन्द्र अवस्थी), बबूल (विवेकी राय) पानी के प्राचीर (रामदरश मिश्र), रथ के पहिए (हिमांशु श्रीवास्तव)। इन सभी उपन्यासों में आधुनिकीकरण के कारण बदलते ग्रामीण समाज का चित्रण किया गया है। इस श्रेणी में व्यंग्यात्मक लहजे में भारतीय समाज के समग्र रूप को चित्रित करने का प्रयास किया गया

है। इस दृष्टि से श्रीलाल शुक्ल कृत 'राग दरबारी' उल्लेखनीय है। इसमें स्वातन्त्र्योतर भारत के ग्रामीण जीवन की मूल्यहीनता को परत-दर-परत उघाड़ने की कोशिश की गई है।

प्रयोगवादी उपन्यास

आधुनिक हिंदी उपन्यासों की नवीनतम् धारा को प्रयोगवादी उपन्यास या आधुनिकता बोध के उपन्यास कहा जा सकता है। औद्योगीकरण, बदलते हुए परिवेश, भ्रष्ट व्यवस्था, महानगारीय जीवन और यान्त्रिक सभ्यता के परिणाम से आज जीवन में वथव, विश्रृंखलता, अकेलापन एवं निराशा घर कर गयी है। कुण्ठा, संत्रास एवं असुरक्षा की भावना ने हमें संत्रस्त कर दिया है। उपन्यासकारों की दृष्टि इस ओर भी गई है और उन्होंने अनेक उपन्यासों में इन्हें अभिव्यक्ति प्रदान की है। मोहन राकेश के 'अन्धेरे बन्द कमरे' तथा 'न आने वाला कल' ऐसे ही उपन्यास हैं। इनके अतिरिक्त राजेन्द्र यादव के 'उखड़े हुए लोग' में उपन्यासकार ने टूटते हुए मानव का चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी ने 'आपका बंटी' में तलाकशुदा दम्पति के बच्चों पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का निरूपण किया है तो नरेश मेहता के 'यह पथ बन्धु था' में अकेलेपन एवं अजनबीपन का बोध कराया गया है। निर्मल वर्मा के उपन्यासों – 'वे दिन', 'लालटीन की छत' और 'एक चिथड़ा सुख' में भी आधुनिकता बोध मुखरित हुआ है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' एवं 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' में भी आधुनिकता बोध का गहरा रूप उभरा है। भीष्म साहनी कृत 'तमस' में विभाजन की मानसिकता एवं उससे लाभ उठाने वाले लोगों को बेनकाब किया गया है। मनोहरश्याम जोशी कृत 'कुरु-कुरु स्वाहा' में युवा पीढ़ी की दिशाहीनता को अभिव्यक्ति दी गई है। उक्त उपन्यासकारों के अतिरिक्त भी सैकड़ों उपन्यासकार नए-नए कथानकों की कल्पना का सुन्दर उपन्यास लिख रहे हैं। शिल्प की दृष्टि से भी नवीन प्रयोग किए जा रहे हैं। धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवां घोड़ा', गिरधर गोपाल का 'चांदनी के खण्डहर' नवीन शिल्प की दृष्टि से उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

आधुनिक उपन्यासों में विषय-वैविद्य के साथ -साथ शैलियों के विभिन्न रूप दिखाई पड़ते हैं। आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, आदि विविध शैलिशें में उपन्यास लिखे जा रहे हैं। आज उपन्यास का कथ्य जीवन के अधिक नजदीक है, उसमें यथार्थ का पुट अधिक है। आधुनिकता बोध से उत्पन्न अकेलेपन, अजनबीयत, यौन विसंगतियां, विद्रोह, कुण्ठा एवं मूल्यों का ह्रास आज के उपन्यास के विषय हैं।

MODULE - 4

ग्लोबल गाँव के देवता (रणेन्द्र)

उपन्यासकार रणेन्द्र

हिंदी साहित्य के नवलेखकों की श्रेणी में रणेन्द्र जी का नाम अग्रणी है। झारखंड के निवासी रणेन्द्र जी आदिवासी समुदायों की सामाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं पर विशेष रुचि रखनेवाला सक्रिय साहित्यकार है। उन्होंने अपनी रचनाओं में आधुनिक यांत्रिक सभ्यता, शहरीकरण, आधुनिक जीवन की उदासी, अकेलेपन, नीरसता आदि का यथार्थ चित्रण है। उन्होंने पीडित, एवं शोषित नारी की समस्याओं को अपनी रचनाओं में मार्मिक रूप में व्यक्त किया है। 'रात बाकी तथा अन्य कहानियाँ' उनका कहानी संग्रह है, 'थोडा स्त्री होना चाहता हूँ' काव्य संग्रह है और 'ग्लोबल गाँव के देवता' उनका उपन्यास है। हिंदी कथा साहित्य के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, यशस्वी कवि रणेन्द्र ने झारखंड एन्साइक्लोपीडिया का संपादन भी किया है। साहित्य क्षेत्र में थोडी सी रचनाओं के जरिए वर्तमान जीवन की विडंबनाओं को प्रस्तुत करके पाठकों और लेखकों का ध्यान अपनी ओर खींचने में कामयाब हुए है।

ग्लोबल गाँव के देवता : कथावस्तु

कथाकार रणेन्द्र का उपन्यास ग्लोबल गाँव के देवता असुर समुदाय के अनवरत जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। आकार की दृष्टि में यह उपन्यास संक्षिप्त है तो भी अपने छोटे कलेवर में भी राष्ट्रीयता, जनतंत्रता और जनता पर आच्छादित भयानक खतरों को स्पष्ट करता है। उपन्यास का मूल कथ्य झारखंड के एक असुर समुदाय का संघर्ष-अपनी रोजी-रोटी-बेटी को लेकर है। एक मास्टर के माध्यम से आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास भूमण्डलीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रभाव एवं परिणाम को ही केन्द्र में रखता है।

प्रस्तुत उपन्यास में झारखंड के पहाडी मैदान में बसे पुरातन असुर समुदाय की दयनीय दरिद्र तथा सबसे उपेक्षित स्थिति का मार्मिक चित्रण है। उपन्यास का आरंभ लेखक की प्रथम नियुक्ति जंगली इलाका भौरापाट के आवासीय स्कूल में होने के खबर से होता है, जहाँ असुर जाति के लोग रहते हैं। लंबे बेरोजगारी के बाद प्राप्त पकरी से नाखुश होकर भी वे भारी मन से भौरापाट आते हैं। लेकिन वहाँ के लोग, नदी, पेड-पौधे, खेती सबसे उनका मन इतना रम जाता है

कि वे एकदम अपना गाँव तक भूल जाते है। पहाड के ऊपर जिस समतल भू-भाग में असुर जाति के लोग रहते हैं, नीचे बॉक्साइट और अन्य खनिज धातुओं का अपार संपदा भी है। राज्य व केन्द्र सरकार की अनुमति से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ- वेदांग और टाटा जंगल पर आधिपत्य जमाने केलिए कई तरह का प्रयत्न करते हैं। कंपनियाँ बॉक्साइट निकालकर गड्ढे वैसे ही छोडते थे जो लोगों केलिए खतरा बन जाते थे तथा वर्षकाल में पानी भरने के कारण मच्छर पलते है और 'सेरिब्रल मलेरिया' जैसे महामारी फैल जाते हैं। वन विभाग ने भी वन-गाँव को खाली करने की नोटिस देते हैं। गाँववाले कंपनियों के खिलाफ अनशन पर बैठ गये और अनशन पर बैठे लोगों को गिरफ्तार करवाते हैं।

उपन्यास के उत्तरार्ध में एक बाबा का प्रवेश है जिसने असुर जातियों की बच्चियों केलिए आवासीय विद्यालय खोलते है। 'शिवदास बाबा' कोयलाश्रम के दिव्य बाबा थे जो लोगों की बीमारी एक क्षण में दूर कर देते थे। बाबा के चमत्कार का प्रभाव सब पर छाया हुआ था। आदिवासी बच्चियों केलिए स्कूल और होस्टल इसलिए बनाये थे कि वे उस मासूम बच्चियों को अपनी काम पूर्ती केलिए इस्तेमाल करें। इस दौरान एक बच्ची की मौत हो जाती है और लाश बरामत होती है। लेकिन पुलिसवालें और अधिकारियों को पैसा देकर अपने को बचा लेते है और बच्ची की हत्या देवी पूजा की तहत हुई है जैसा यकीन गाँववालों को दिलाते हैं। वास्तव में बाबा आदिवासियों को यहाँ से भगाने में कंपनियों की मदद कर रहे थे। शिंडाल्को कंपनी सखुआपाट के मैनेजर श्री किशन कन्हैया पांडेय कंपनियों में काम करनेवाले लडकियों से अवैध संबन्ध रखते है और इसका सी.डी तैयार करके घरवालों को भी अपने इशारों में नाचने को मजबूर कर देते हैं।

गाँव में कुछ ऐसे लोग भी थे वे सब मिलकर कंपनियों के खिलाफ आवाज़ उठाते है। इसमें प्रमुख है लालचन, रामचन, डॉक्टर रामकुमार, रुमझुम, ललिता, बुधनी, एतवारी, गन्दूर आदि। वे जानते थे कि धीरे-धीरे ये कंपनियाँ सरकार की मदद से अपनी जमीन हडप रहे है और गाँववालों को वहाँ से भगा देते हैं। कंपनियों का एक ही लक्ष्य था कि असुर जाति को उस जमीन से निकालकर वहाँ के खनिज संपदा को हडपना, परन्तु इस योजना में वे परास्त हो गये क्योंकि जितने लोगों को वे मार गिराये उसके मुकाबले लाखों नौजवान आकर खडे हो गये। क्योंकि अपनी ज़मीन की रक्षा करना तथा अपनी माँ-बेटी की मान बचाना उनका दायित्व था। कंपनियों

के विरुद्ध कार्य करनेवालों के माँ-बेटियों को पुलिसवाले खुलेआम बलात्कार किया और आदिवासी लडकियों को जबरदस्ती से अधिकारियों के हाथों फँसाती है।

कंपनियों और सरकार के खिलाफ आवाज़ उठाने के कारण रुमझुम, डॉक्टर रामकुमार, रामचन आदि को मार दिया गया। कंपनियों से समझौता करने केलिए निकले ललिता, बुधनी, गन्दूर, एतवारी, लालचन दा के चाचा और पन्द्रह गाँववाले ट्रक में जा रहे थे लेकिन बडे विस्फोड के साथ उनकी धज्जियाँ उड गयी। ग्लोबल गाँव के देवता खुश थे। जो लडाई वैदिक युग में शुरु हुई थी, ग्लोबल गाँव के देवताओं ने वह मुकाम पा लिया था।

कथाकार रणेन्द्र का उपन्यास ग्लोबल गाँव के देवता वस्तुतः आदिवासियों-वनवासियों के जीवन का सन्तप्त सारांश है। हाशिये के मनुष्यों का सुख-दुख व्यक्त करता यह उपन्यास झारखंड की धरती से उपजी महत्वपूर्ण रचना है। शताब्दियों से संस्कृति और सभ्यता की पता नहीं अवशिष्ट के रूप में जीवित रहनेवाले असुर समुदाय की गाथा पूरी प्रामाणिकता व संवेदनशीलता के साथ रणेन्द्र ने लिखी है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' में भूमंडलीकरण वा बाज़ारवाद का प्रभाव

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास की मूल समस्या भूमंडलीकरण व बाज़ारवाद ही है। झारखंड के आदिवासी समुदाय का संघर्ष अपनी रोज़ी रोटी-बेटी को लेकर है। व्यक्ति और समाज के जीवन में देशी विदेशी का फर्क मिट गया है। भारत में गरीबी और भूखमरी वहीं पर ज्यादा है, जहाँ अपार खनिज संपदा मौजूद है। झारखंड भी खनिज, वन, नदी आदि से संपन्न है इस खनिज संपदा को लूटने के लिये ही बडे-बडे कंपनियाँ आयी है। रुमझुम असुर, प्रधानमंत्री से दरखास करता है – " बडी हिम्मत बाँधकर यह खत लिख रहा हुँ। मैं आपके ईमान्दारी और सादगी का कायल रहा हुँ... हमारे पूर्वजों ने जंगलों की रक्षा करने की ठानी तो उन्हें राक्षस कहा गया। लेकिन बीसवीं सदी की हार हमारी असुर जाति की अपने पूरे इतिहास में सबसे बडी हार थी। ... टाटा जैसे कंपनियों ने हमारा नाश किया।... मज़बूरन पाट देवता की छाती पर हल चलाकर हमने खेती शूरू की। किन्तु बॉक्साइट के वैध-अवैध खदान, विशालकाय अजगर की तरह हमारी ज़मीन को निगलता बढता जा रहा है। हमारी बेटियाँ और हमारी भूमी हमारे हाथों से निकलती जा रही है।"

भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद ने आराम से जीनेवाले गाँववालों की नींद हराम की है। उनके ज़िन्दगी को ही उजाडकर रख दी है। परिवर्तन की आड में वे लोगों की परंपरा और रूढियों को तोडने का आह्वान करते है। आजकल गाँव की शान्ति अशान्ति में बदल गयी है। लेखक के बातों से स्पष्ट हो जाते है कि भूमंडलीकरण के कारण गाँव में क्या बदलाव आये है- " वहाँ जमुनियाँ रंग की एतवारी भी नहीं थी और न था उसका बिलौती और लहसुन की छाँकवाला कोयनार साग का स्वाद। वहाँ मिज़ मैडम, कच्छप मेडम और सुषमा सिंह खैरवार भी तो नहीं थी और न था हॉस्टल से आनेवाली बच्चियों का सम्मवेत कलरव संगीत, जिसकी लोरी-धुन से ही मुझे नींद आती थी और जिसकी प्रभाती-सी उठान से नींद टूटती थी। वहाँ बुधनी की 'पेशल' चाय नहीं थी और न था धुस्का-धुकनी चटक स्वाद। वहाँ लालचन भौजी की मुस्कराहट और देवरवाला गीत भी नहीं था।"

प्रस्तुत कथन में ग्राम्य जीवन की संकल्पना है जो भूमंडलीकरण के कारण कोसों दूर होती जा रही है। आज सरसों, मटर, मथुआ और चने के साग की जगह फास्टफुड आ गये है। भूमंडलीकरण ने लोगों की वेशभूषा, खान-पान, सोच-विचार तक बदल डाला है। आज गाँव की शांति और शुद्धता कहीं खो गयी है।

उपन्यास में आदिवासियों के पूर्वजों ने जो खनिज, वनों को सुरक्षित रखा था आज वहाँ कुछ भी नहीं है। खनिज, वन सब नष्ट हो गये है। धनहर खेत की जगह बडे-बडे गड्ढे ही है। कंपनियाँ आकर बॉक्साइट निकाल कर जाते है और गड्ढे वही छोड जाते है उन्हें सिर्फ अपने मुनाफे की चिन्ता है। यह विशाल गड्ढे जो है आदिवासियों के जीवन का यथार्थ प्रतीक है क्योंकि उनके जीवन भी गड्ढे के समान खाली है। अधिकारियों ने बडे-बडे कंपनियों के हित के लिये मासूम आदिवासियों को नक्सल कहकर अपने ही ज़मीन से बेदखल करके पूरे असुर समाज को ही मिटाने की कोशिश कर रहे है।

आज पूँजीवाद की विशेषता यह है कि उसने अपने चेहरे पर कुछ लुभावने मुखौटे चठा रखे है। ये मुखौटे भूमंडलीकरण और विश्वग्राम के विकास और जनतंत्र की रक्षा के मुखौटे हैं, जिनकी आड में बाज़ारवाद पनप रहा है। भूमंडलीकरण के बहाने बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जिस तरह से भारत में अपना पाँव पसार रही है, उसके कारण एक ऐसी चमक दमक वाली रंग-बिरंगी दुनिया का

निर्माण हो रहा है। जिसे देखकर हमारी आँखें चकाचौथ हो जाती है। ज्यों-ज्यों उपभोग और आर्थिक प्रगति के बडे संसार से जुड रहे हैं, त्यों-त्यों अपनी भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता से दूर होते जा रहे है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' में भूमंडलीकरण व बाज़ारवाद के तहत आदिवासी असुर समुदाय पर होनेवाले अत्याचारों और अन्यायों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। पूजींवादी वर्ग विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों एवं आर्थिक संसाधनों को लूटने केलिए वहाँ के सरकार, सरकारी व्यवस्थाओं एवं धर्म-राजनीति आदि के माध्यम बनाते है। धर्म को राजनीति में मिलाकर राज करना पूजींवादी आर्थिक नीतियों को लागु करने में सहायक होता है। जब हम धर्म और जाती में विभजित होकर आपस में टकराएँगे तो पूँजीवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हमारे राष्ट्र और संसाधन को लूट लेंगे। भूमंडलीकरण के इस युग में गाँव ग्लोबल बनता जा रहा है और ग्लोबल अब गाँव तक पहूँच गया है। और जिस तरह पुराणें में देवताओं और असुरों के बीच लडाई होती थी उसी तरह आज ग्लोबल देवताओं और देश के स्थानीय जनवासी असुरों के साथ संघर्ष हो रहा है। इस लडाई में ग्लोबल देवताओं का गाँव पर अपना कबज़ा है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' में चित्रित नारी शोषण समस्याएँ

उपन्यास में नारी को भोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। गोनू सिंह, पांडेय जी, पुलिसवाले आदि मासूम बच्चियों एवं औरतों के साथ जबरदस्ती करके कामवासना की पूर्ती करते हैं। शिवदास बाबा जैसे लोग स्कूल में पढनेवाली छोटी बच्ची को भी नहीं छोडते। इनका समर्थन डॉ. रामकुमार के अनुभव के द्वारा व्यक्त किया है – "कनारी डेरे से कितनी बार उन्हें आधी-आधी रात का चुपके से गाडी में बैठकर आश्रम ले जाया गया था। कितनी-कितनी बार उन्होंने बाबा की कोठरी में बेहोश पडी कमसिन बच्चियों को पानी-खून चढाकर बचाई थी।"

शिवदास बाबा गाँव-गाँव धुमकर हवन भगतों को कंठी धारण करवाना और जादू-टोना, डाइन, बिसाही करके मासूम लोगों को आकर्षित करने के पीछे का उद्धेश्य नेक नहीं था। आदिवासी बच्चियों को शिक्षा देने के लिए स्कूल और हॉस्टल इसलिए बनायी कि औरत-बाबा की कमज़ोरी है। डॉ.रामकुमार के शब्दों में – " उसे मानसिक इलाज की ज़रूरत थी। अकेले में किसी भी उम्र की महिला को देखकर वह अपना मानसिक नियंत्रण खो देता था।" प्रस्तुत कथन से साफ

है कि शिवदास बाबा एक गिरे हुए इन्सान है। नारी उनके लिये सिर्फ भोग की वस्तु है। उनके आँखों में बच्ची-बूढी में कोई फरक नहीं बस औरत हो यही काफी है।

गोनू सिंह भी पैसे और औरत के पीछे भागनेवाले आदमी है। वह भी औरत को काम वासना की पूर्ती के लिये कुछ भी करने के लिए तैयार है। लेखक के शब्दों से स्पष्ट है- " पर्व त्योहार पर गोनू सिंह को तीन-चार दर्ज़न साडियाँ बाँटनी पडतीं। उसे तो अब याद भी नहीं था कि जवानी में किस-किस गाँव में, किस-किस जाति की रखनी छोड रखी थी। इसलिए होली-दीवाली में जब उसकी कथित उप-पत्नियाँ जिनमें कई उससे भी ज्यादा बुढा गयी थीं, साडी बख्शीश, खर्चा-पानी वसूलनें आती तो कइयों को तो वह पहचान भी नहीं पाता।"

इससे व्यक्त होता है कि अपनी जवानी में भी गोनू सिंह औरतों के ऊपर अत्याचार करते थे और बूढा होने पर भी उनके इस स्वभाव में कुछ बदलाव नहीं आये पहले से ज्यादा औरतों के मामलों में दिलचस्पी रखते है। किशोरी हो या बूढी गोनू सिंह के नज़र में औरत सिर्फ भोग की वस्तू है। लेखक के शब्दों से हमें यह स्पष्ट होते है- " गोनुआ तो गोनुआ ही था। अपने ज़ालिम बाप की सच्ची औलाद। ऐसा भी नहीं था कि उसने बूढा होते कंठी धारण कर ली थी। रखनियों की जवान बेटियों का भी भरपूर इस्तेमाल करता। किसको थाना के बडा बाबू से सटाना है किसको बी.डी.ओ साहब के लिए बचाना है और कौन विधयक जी के नाइट हाल्ट में गोड दबाएगी? सबका हिसाब-किताब बुढवा रखता।"

शिंडाल्को कंपनी के मैनेजर किशन कन्हैया पांडेय भी औरत के पूजारी है। सुन्दर-सुशील पत्नी और एक बेटी है। औरतों के साथ नाजायज़ संबंधी रखने के कारण ही उनकी पत्नी पन्द्रह साल की दांपत्य जीवन छोड जाती है। बेटी की शादी कराने के बाद पचास के होते-होते पांडेजी फिर से बैचलर हो गये। छोटी सी उम्र में ही नौकरी मिलने के कारण बंगला, गाडी पूरी ऐश और आराम से जीते थे। नारी के साथ उनकी रवैया इन वाक्यों से स्पष्ट है- " बंगले के पीछे छोटा-सा स्वीमिंग पूल, जिसमें अभिसारिकाओं के साथ वे और उनके अतिथि जलक्रीडा किया करते।"

इसके अलावा मासूम लडकियों को नौकरी देकर उसे अपने जाल में कँसाकर शारीरिक संबंध जोडते है। उसका सबूत बनाकर रखते है और आवश्यकता पडने पर उन्हें ब्लाकमेल करे उनसे अपने काम निकालने के लिये मज़बूर करते है। 'सलोनी' नाकम असिस्टन्ट की रातोरात

सख्रु आपाट ऑफिस में तबादला उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। पांडेय जी की शैतानियत इन वाक्यों में व्यक्त होता है कि औरत को वे किस तरह जाल में फसाते है- " रामरति ने झोले से निकाल एक पुराना वीडीयो कैसेट जेम्स को थमाया, जिसके बारे में सुनकर सलोनी और जेम्स दोनों काठ मार गया। यह सलोनी के पांडे बाबा की छत्रछाया वाले दिनों का कैसट था, तन्त्र साधना वाला।"

पांडेय जी जो इतने बडे कंपनी के मैनेजर है पचास साल की आयु है फिर भी अपनी बेटी की उम्र की लडकियों के साथ नाजायज़ संबंध रखते है। झूठी हमदर्दी दिखाकर मासूम लडकियों को अपने जाल में फसाकर जीवन भर उनके हाथों की कठपुतली बनाकर रखते है।

उपन्यास में नारी को कामपूर्ती का साधन माननेवालों में भौरापाट के पुलिसवाले भी शामिल है। गाँव के लोग बडे-बडे कंपनियों के अधिकरियों के विरुद्ध काम करने के कारण गाँव के मर्दों के नाम पुलिस केस बना लेते है। उनके खोज में आनेवाले पुलिसवाले घर के औरतों के इज्जत पर हाथ डालते हैं। पुलिस के गिरफ्तारी से डर कर मर्द लोग गाँव के बाहर छिप जाते है। घर में बूढे, बच्चे और औरत ही बचते है। पुलिसवाले इस बात का ज़िक्र खुलेआम करते है कि औरतों के इज्जत लूठना उनके लिये अपनी मर्दानी दिखाना या शान की बात है इसलिए आदिवासियों के सामने वे कहते है- " ई छौडिन सबको जानते नहीं है हम? इनमें से कौनो ऐसन नहीं है जो हमरी जाँघ के नीचे से नहीं निकली हों।"

इतनी गन्दी भाषा में बात करके पुलिसवालों ने यह साबित किया है कि औरतों के साथ जो कुछ भी किया है उन्हें इस बात का कोई पश्चाताप नहीं है बल्कि उस पर नाज़ करते हैं।

वर्तमान जीवन में औरत की स्थिति इससे भी बत्तर है। घर के बाहर चैन से कोई भी चल नहीं सकती। स्कूल की लडकियों से लेकर यमराज के वहाँ जाने को तैयार बूंढियों तक की औरत को मर्द काम वासना से देखते है। छोटी बच्चियों और बुढिया तक के इज़्जत पर ऐसे दरिन्दे हाथ डालते है। आज नारी पुरुष के तरह सभी क्षेत्र में आगे है फिर भी ऐसी नाइन्साफी ही समाज में देखी जा रही है। समाज में नारी की पूजनीय स्थान जो है पुरुष से श्रेष्ट माने जाते है। असलियत तो ऐसा नहीं है।

MODEL QUESTIONS

Short answer questions (2 marks)

प्र) पीरबक्श अपने ड्योढ़ी पर परदा क्यों लटकाये ?

उ) पीरबक्श अपने परिवार की दारिद्र्य को छिपाने के लिए परदा ड्योढी पर लटकाया।

प्र) बबर अली ख्रान कौन है?

उ) बबर अली ख्रान मुहल्ले के लोगों को रुपया उधार देने वाला था। उसे मुहल्ले के लोगा पंजाबी ख्रान नाम से बुलाते थे।

प्र) पीरबख्श बबर अली ख्राँ से कितने रुपये कर्ज लिया था?

उ) पीरबख्श, बबर अली ख्राँ से चार आना रुपया महीना पर चार रुपया कर्ज लिया था।

प्र) मंगल कैसे अनाथ हो गया था?

उ) मंगल के पिता गूदर प्लेग के कारण मर गया और माँ भूँगी ज़मीनदार महेशनाथ के घर का परनाला साफ करते वक्त साँप के डसने से मर गयी। इस तरह मंगल अनाथ बन गया।

प्र) मंगल ज़मीदार के घर वापस क्यों लौटा?

उ) मंगल को जब ज़मीदार के घर से निकाल दिया जाता है तो उसे ख्राने को कुछ नहीं मिला। भूख्र ने मंगल को ज़मीदार के घर वापस लौटाया।

प्र) गाँव में पंचलाइट आते ही चारों और क्यों उदासी छा गयी?

उ) गाँव में पंचलाइट के आने से सभी गाँववाले ख्रुश थे। लेकिन जब उन्हें यह अहसास होता है कि पंचलाइट जलाना कोई नहीं जानता तो उदासी छा गयी।

प्र) मेहतो टोली के पंचों ने कैसे पंचलाइट ख्ररीद लिया?

उ) पिछले पन्द्रह महीने से दण्ड-जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स ख्ररीदा।

प्र) गोधन ने कैसे सबका दिल जीत लिया?

उ) गोधन पंचलाइट जलाकर सबका दिल जीत लिया।

प्र) मुन्नी किसकेलिए जिद करती है?

उ) मुन्नी पाजेब केलिए जिद करती है।

प्र) पिता ने आशू पर क्यों शक किया?

उ) जिस दिन पाजेब खो गया था उस दिन आशू पतंग और एक डोर का पिन्ना नया लाया था। इस लिए पिता ने आशू पर शक किया।

प्र) 'नेलकटर' कहानी में माँ की मृत्यू कैसे हुई?

उ) प्रस्तुत कहानी में माँ की मृत्यू कैंसर से हुई।

प्र) 'नेलकटर' कहाँ से लाये थे?

उ) नेलकटर दो साल पहले पिताजी कुम्भ के मेले से लौटने पर इलाहाबाद से लाये थे।

प्र) पत्नी वी.आई.पी से किसके बारे में बात कर रही थी?

उ) पत्नी वी.आई.पी से अपने घर के सामने के गन्दे नाले के बारे में बात कर रही थी।

प्र) नाले में लोग क्या-क्या चीजें बहते देखने लगे?

उ) नाले में लोग फूल, किताबें, चिडियों के घोंसले, जड से उखडे पेड, और कीमती चीजें तैरती बहती दिखने लगे।

प्र) नयी कहानी के बाद हिंदी साहित्य में विकसित कहानी आन्दोलनों का नाम लिखिए।

उ) अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, समकालीन कहानी, जनवादी कहानी आदि।

प्र) नारायण कौन है?

उ) नारायण, शकलदीप बाबू का बडा लडका है। वह रोजगार केलिए हाथ पैर मार रहा है। पिछले तीन-चार साल से बहुत सी परीक्षाओं में बैठने, एम.एल.ए लोगों के दरवाज़ों के चक्कर लगाने के बावजूद उसको अब तक कोई नौकरी नहीं मिल सकी थी। दो बार डिप्टी कलक्टरी के इम्तिहान में भी वह बैठ चुका था।

प्र) मंगल को मालकिन घर से क्यों निकाली गयी?

उ) एक दिन मालकिन का बेटा सुरेश और उनके साथियाँ खेलते वक्त मंगल को घेर लिया और जबरदस्ती घोडा बना दिया। सुरेश ने चटपट उसकी पीठ पर आसन जमा लिया। मंगल कुछ देर तक तो चला, लेकिन उस बोझ के मारे उसने धीरे से पीठ सिकोडी और सुरेश लद से गिर पडा और माँ से शिकायत की। इस तरह मंगल को मालकिन ने घर से निकाल दिया।

प्र) भूँगी का बेटा क्यों दुबला होता जाता था?

उ) मालकिन को दूध न होने के कारण भूँगी, बाबूसाहब के लडके को दूध पिलाती थी। इस लिए भूँगी अपने बेटे को दिन-रात में एक-दो बार ही दूध पिला पाती थी। भूँगी के तीन महीनो वाले

लडके को गाय का दूध दिया जाता था जिसे वह हजम नहीं कर पाता और बार-बार उलटी करता था। इस लिए भूँगी का बेटा मंगल दिन-दिन दुबला होता जाता था।

प्र) पंचायत ने गोधन का हुक्का-पानी क्यों बंद कर दिया गया?

उ) गोधन दूसरे गाँव से आकर बसा था और टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया था। इस बीच गुलरी काकी पंचायत में फरियाद की कि गोधन रोज उसकी बेटी मुनरी को देख कर सिनेमा का गीत गाता है। इस लिए पंचायत ने गोधन का हुक्का-पानी बंद कर दिया।

प्र) पाजेब कहाँ से वापस मिली?

उ) मुन्नी को पाजेब उसकी बुआ ने दिया था। जब बुआ अपने घर लौटती है तो अनजाने में एक पाजेब उनके बस्ते में हो जाता है। फिर अगली बार बुआ वापस लेखक के घर आती है और अपने बास्केट की जेब में हाँथ डालकर पाजेब निकाली। पाजेब देखते ही लेखक के होश उड़ गए। उसे लगा कि जैसे सामने पाजेब न होकर बिच्छू हो। बुआ बोलीं कि – 'उस रोज भूल से यह एक पाजेब मेरे साथ ही चली गयी थी'।

प्र) पिता कहानी में पिता की स्वभावगत विशेषतायें लिखिए?

उ) कहानी के पिता रात को घर के बाहर खुली हवा में सोते थे। उन्हें कभी वाशबेसिन में मुँह-हाथ धोते नही देखा। बाहर जाकर बगिया वाले नल पर कुल्ला-दातुन करते हैं। फिर आँगन में तेल चुपडे बदन पर बाल्टी- बाल्टी पानी डालते हैं। लडकों द्वारा बाजार से लाये बिस्कुट, महँगे फल पिता कुछ भी नहीं लेते। कभी लेते हैं तो बहुत नाक-भौं सिकोडकर उसके बेस्वाद होने की बात पर शुरु में ही जोर दे देते हुए। वह अपना हाथ-पाँव जानते हैं, अपना अर्जन और उसी में उन्हें संतोष है। 35 वर्षों से वे दो ही ग्रन्थ पढते आ रहे है रामायण और गीता।

प्र) शकलदीप बाबू कैसे बीमार पड गये?

उ) नारायण इंटर्व्यू देने गया और उसने इंटर्व्यू भी काफी अच्छा किया। अब शेकलदीप बाबू और भी व्यस्त रहने लगे। उनके सपने कुलांचे मारने लगते है। साक्षात्कार का परिणाम आने तक उनकी मानसिक हालत अजीब हो जाती है। उनकी भूख बढ जाती है और आधी रात में पत्नी को जगाकर खाने को माँगते है। इस बदपरहेजी तथा मानसिक तनाव का नतीजा यह निकला कि वह बीमार पड गये। उनको बुखार तथा दस्त आने लगे।

प्र) सचेतन कहानी आन्दोलन का परिचय दीजिए।

उ) नयी कहानी आन्दोलन के बाद हिंदी में सचेतन कहानी नामक आन्दोलन प्रसिद्ध हुआ। यह नयी कहानी आन्दोलन की प्रतिक्रिया के रूप में शुरू हुआ था। डा. महीपसिंह ने अपनी पत्रिका 'संचेतना' के माध्यम से इस आन्दोलन को विकसित किया। इसे सचेतन कहानी आन्दोलन कहते है। नयी कहानी के कथ्य एवं शिल्प पक्ष का विरोध करते हुए डॉ. महीपसिंह के अलावा मनहर चौहान, रामकुमार भ्रमर, बलराज पण्डित, वेद राही, मेहरुन्नीसा परवेज आदि अनेक कहानीकारों ने मिलकर संतुलित, स्वस्थ और व्यापक दृष्टिकोण के साथ, तात्विक आधार के साथ जीवन का विश्लेषण किया। डॉ. महीपसिंह के 'अजाले के उल्लू', 'घिराव', 'इक्यावन कहानियाँ', आदि कहानी संग्रह उल्लेखनीय है।

Annotations (5 marks)

प्र) सप्रसंग व्याख्या कीजिए - 'लोग कहते हैं, दूध का दाम कोई नहीं चुका सकता और मुझे दूध का यह दाम मिल रहा है'

उ) प्रस्तुत कथन प्रेमचंद द्वारा लिखी कहानी 'दूध का दाम' से लिया गया है। कथा सम्राट के रूप में प्रेमचन्द हिंदी साहित्य का मील स्तंभ है। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ, ग्यारह उपन्यास और दो नाटकों की रचना की। उनकी सभी कहानियों का संग्रह 'मानसरोवर' नाम से प्रकाशित हुआ है।

दूध का दाम हमेशा की तरह प्रेमचन्द की एक मार्मिक कहानी है जहाँ पर प्रेमचन्द ने सामाजिक विषयों के बारे में अपनी आवाज उठायी है। जाति भेदभाव और गरीबी इसका विषय है। ये कहानी एक भंगी और उसका बेटा मंगल के जीवन को चित्रित करती है।

ज़मीनदार महेशनाथ की पत्नी को दूध न होने के कारण उनके लडके को दूध पिलाने केलिए भूँगी को घर में रखा गया। इस दौरान भूँगी का लडका मंगल अनाथ हो जाता है। अनाथ मंगल ज़मीनदार के घर में रहता था।

एक दिन ज़मीनदार का बेटा सुरेश और उनके साथियाँ खेलते वक्त मंगल को घेर लिया और जबरदस्ती घोडा बना दिया। लेकिन उस बोझ के मारे मंगल धीरे से पीठ सिकोडी और सुरेश लद से गिर पडा। जब सुरेश अपनी माँ से शिकायत की, तब मालकिन, मंगल को घर से निकाल देती है।

घर से निकालने के बाद मंगल उस रात बचपन को बेचैन करने वाली भूख से न रह पाया तो सीधे महेशनाथ के द्वार पर आ खडा हुआ। जब सारे लोग थाली से उठ गये तो वह निराश से एक लम्बी साँस खींचकर जाना ही चाहता था तब कहार पत्तल में थाली का जूठ ले जाता नजर आया। पेट की आग को रोक न सका तो मंलग अंधेरे से निकलकर प्रकाश में आ गया। कहार ने पत्तल को ऊपर उठाकर मंगल के फैले हुए हाथों में डाल दिया। मंगल ने उसी ओर ऐसी आँखों से देखा, जिसमें दीन कृतज्ञता भरी हुई थी। भोजन खाते वक्त मंगल अपने दोस्त टोमी कुत्ते से कहता है- 'लोग कहते है दूध का दाम कोई नही चुका सकता और मुझे दूध का यह दाँम मिल रहा है'।

प्र) " चींजे कभी खोती नही है, वे तो रहती ही है। अपने पूरे अस्तित्व और वज़न के साथ। सिर्फ हम उनकी वह जगह भूल जाते हैं।" सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उ) प्रस्तुत प्रसंग उदय प्रकाश की 'नेलकटर' कहानी से लिया गया है। दरियाई घोडा, तिरिछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरीवाली लडकी, दत्तात्रेय का दुःख, मेंगोसिल आदि कहानी संग्रहों के कारण उदयप्रकाश हिंदी के सबसे अधिक चर्चित समकालीन कहानीकार है।

कैंसर पीडित माँ के नाखून काटने वाला कथावाचक उस नेलकटर को आज भी खोज रहा है जब वह बडा हो चुका है। उसे नेलकटर नही मिलता। असल में यह नेलकटर की नही उस संवेदना की खोज है जो हम आज की भागदौड भरी जिन्दगी में भूल चुके हैं। संबन्धों में वह भावना नही रही जो हमारी किशोरावस्था में थी क्योंकि तब हम संवेदनात्मक धरातल पर संबन्धों को महसूस करते थे, जीते थे। नेलकटर रोजमर्रा काम में अपनेवाली वस्तु है किन्तु माँ के साथ जुडकर वह भी उतना ही जरुरी हो जाता है जितनी माँ की स्मृति। कहानी की अन्तिम पंक्तियाँ कहानी के उद्देश्य तथा भूली संवेदना का अथ स्पष्ट कर देती है। संबन्धों की ऊष्मा, संवेदना तथा भावना खोई नहीं है बल्कि हम उनकी जगह भूल गये हैं।

वास्तव में कहानी 'नेलकटर' संबन्धों में संवेदना तलाशने की प्रतीकात्मक कहानी है। आज हम बौद्धिक व औपचारिक रूप से संबन्धों को बस निभाते भर हैं। ऐसे में संबन्धों और समीकरणों में फर्क करना कठिन हो जाता है।

प्र) 'उस समय उनकी खुशी का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने अपने लडके की साँस को नियमित रूप से चलते पाया'। संप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उ) प्रस्तुत प्रसंग अमरकांत की 'डिप्टी कलक्टर' नामक कहानी से लिया गया है। अमरकान्त की प्रसिद्धि 'नयीकहानी' की प्रतिष्ठा के साथ ही हुई थी। आपने मुख्य रूप से निम्न मध्यर्वग के जीवन संदर्भों से अपनी कहानियों की सामग्री ली है। अमरकान्त दरअसल एक ऐसे कहानीकार है जिन्होंने कहानी के वृत्तान्त को रेखाचित्रात्मक ढंग में ढालने का कौशल किया। उनके कहानी संग्रह है – जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, कुहासा, तूफान, कला प्रेमी आदि। सूखा-पत्ता, आकाश पक्षी, काले उजले दिन, सुखजीवि, बीच की दीवार, ग्राम सेविका आदि उनके प्रमुख उपन्यास है।

प्रस्तुत कहानी में शकलदीप बाबू का बेटा नारायण डिप्टी कलक्टरी के इंटर्व्यू के बाद नतीजा का इंतजार में था। जिस दिन डिप्टी कलक्टरी का नतीजा निकला रविवार का दिन था। शकलदीप बाबू सबेरे रामायण का पाठ तथा नाश्ता करने के बाद मन्दिर चले गये। वह बहुत देर तक मन्दिर की सीढी पर बैठ गये। अन्त में भगवान के समक्ष दण्डवत कर बाहर निकले थे कि वहाँ के मास्टर जंगबहादुर सिंह ने बताया कि डिप्टी कलक्टरी का नतीजा निकल आया लेकिन नारायण का नाम जरा नीचे है। शकलदीप बाबू का चेहरा फक पड गया। उनके पैरों में जोर नही था और मालूम पडता था कि वह गिर जाएँगे। वह किसी तरह घर पहूँचा। सारे घर में मुर्दनी छाई हुई थी। उन्होंने अपने बेटे के कमरे में झाँककर देखा। बाहरवाला दरवाजा और खिडकियाँ बन्द थी, परिणामस्वरूप कमरे में अँधेरा था। वे आगे बढकर गौर से देखा, तो चारपाई पर कोई व्यक्ति छाती पर दोनों हाथ बाँधे चित पडा था। वह नारायण ही था। वह धीरे से अंदर दाखिल हुए। उन्होंने नारायण को आँखें फाड-फाडकर गौर से देखा। उसकी आँखें बंद थी और वह चुपचाप पडा हुआ था, लेकिन किसी प्रकार की आहट, किसी प्रकार का शब्द नही सुनाई दे रहा था। वे एकदम डर गये और काँपते हृदय से अपना बायाँ कान नारायण के मुख के बिल्कुल नजदीक कर दिया। और उस समय उनकी खुशी का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने अपने लडके की साँस को नियमित रूप से चलते पाया।

डिप्टी कलक्टरी निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सपनों और उम्मीदों की कहानी है। सपने या उम्मीद जब टूट जाती है तो मनुष्य की मानसिक अवस्था भी टूट सकती है। इस स्थिति में वह कुछ भी कर सकता है। यहाँ तक आत्महत्या भी। इसी शंका से शकलदीप बाबू अपने बेटे नारायण को चुपचाप पडा देख कर डर गया और अपना बायाँ कान नारायण के मुख के बिल्कुल नजदीक कर दिया।

'उस समय उनकी खुशी का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने अपने लडके की साँस को नियमित रूप से चलते पाया'।

Paragraph questions (5 marks)

प्र 1) बबर अली खान द्वारा पीरबक्श के ड्योढी पर लटका परदा झटक ने के बाद क्या दृश्य देखा?

उ) खान क्रोध में डण्डा फटकार कर ड्योढी पर लटका दरी का परदा झटक लिया। ड्योढी से परदा हटने के साथ ही चौधरी के जीवन की डोर टुट गयी। वह डगमगा कर ज़मीन पर गिर पडे।चौधरी में उस दृश्य को देख सकने की ताब न थी परन्तु वहाँ इकट्टे लोगों ने देखा घर की औरतें-लडकियाँ भय से कॉप रही थी, परदा हट जाने से ऐसे सिकुड गयी जैसे उनके शरीर का वस्त्र खींच लिया गया हो। असल में वह परदा घर भर की औरतों के शरीर का वस्त्र था। उनके शरीर पर बचे चीथडे उनके एक तिहाई अंग ढँकने में भी असमर्थ थे। उस नगनता की झलक से खान की कठोरता भी पिघल गयी । ग्लानि से थूक परदे को आँगन में वापिस फेंक निराशा एवं असफल लौट गया। वहाँ इकट्टे भीड भय से चीख कर भागती हुई औरतों पर दया करके दरवाजे के सामने से हट गयी चौधरी बेसुध पडे थे। जब उन्हें होश आया, ड्योढी का परदा आँगन में सामने पडा था, परन्तु उसे उठाकर फिर से लटका देने का सामर्थ्य उनमें शेष न था। शायद अब उसकी आवश्यकता भी न रही थी।

प्र) पिता कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उ) शीर्षक से ही स्पष्ट है कि कहानी पिता और परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। पिता आद्यंत कहानी का मेरुदंड है। इस कहानी में एक सुगठित कथा नही है। गर्मी से बेचैन कर देनेवाली रात में पुत्र के मन में अपने पिता के अद्भुत व्यवहार एवं उनकी गर्वीली आदतों का याद हो आता है। तमाम कष्टों के बावजूद वे किसी के द्वारा उपलब्ध करायी गयी सुविधा लेना नकार देते हैं। यह विडंबना ही है कि सबके लिए सुविधाएं जुटाने वाले पिता खुद उसमें शामिल नहीं होते या फिर कम से कम शामिल होते हैं। अतः 'पिता' नाम सार्थक बन पडा है। यह कहानी पिता-पुत्र संबन्धों पर एक नये ढंग से सोचने-विचारने को प्रेरित करती है। पिता बार-बार बच्चों को मान देते हैं। उनके द्वारा दी गई सुविधाओं को नकारकर वास्तव में पिता की भूमिका को पूरे परिवार को एक सूत्र में रखने की जिम्मेदारी को वे खूब निबाह रहे हैं। लेकिन बच्चे इसे उनका अहं समझ रहे हैं। कहानी में परिवेश या घटना रात भर की है लेकिन पिता का समस्त जीवन यहाँ जीवन्त हो उठा है।

प्र) स्वीमिंग पूल कहानी की विशेषता लिखिए?

उ) स्वीमिंग पूल कहानी असगर वजाहत द्वारा लिखी गयी है। इस कहानी में कथावाचक के घर के सामने से एक गंदे नाले बहती है। इस नाले को साफ करने केलिए कई अर्जियाँ सरकारी कार्यालयों, नगर निगम एवं नेताओं को दिये थे। लेकिन कोई हल नहीं निकला। कहानीकार राजनैतिक चरित्र और भ्रष्ट व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करता है। चरम सीमा तक पहूँचते-पहूँचते कहानी नये मोड लेती है। यहीं से कहानीकार प्रतीकों द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्ट व्यवस्था एवं व्यवहार का चित्र व्यग्य द्वारा चित्रित किया है। नाला स्वीमिंग पूल नही है किन्तु जिसे हम साफ-सुथरी दुनिया कहते है, वह गन्दे नाले की तरह है। हम उस गन्दे नाले को स्वीमिंग पूल समझकर तैर रहे है। गन्दे नाले का साफ न होना उच्चाधिकारियों की समृद्धि का रूप बन जाता है। कहानी 'स्वीमिंग पूल' गैरजिम्मेदार और भ्रष्ट होती राजनीति का विद्रूप चेहरा दिखाती है। आम-आदमी की सुविधा पर सत्ताधारी वर्ग का जीवन फल-फूल रहा है।

प्र) शकलदीप बाबू के दिनचर्या में आये बदलाव को स्पष्ट कीजिए।

उ) नारायण ने जब डिप्टी कलक्टरी की फीस तथा फार्म भेजने के बाद दूसरे दिन से ही शकलदीप बाबू के दिनचर्या में बदलाव आने लगा। दूसरे दिन आदत के खिलाफ प्रातःकाल शकलदीप बाबू की नींद उचट गयी। वह हडबडाकर आँखें मलते हुए उठ खडे हुए। घर के सभी लोग निद्रा में निमग्न थे। लेकिन बाहर के कमरे से धीमी रोशनी आ रही थी। उन्होंने देखा बेटा नारायण मेज पर रखी लालटेन के सामने सिर झुकाये ध्यान पूर्वक पढ रहा है। अचानक उनमें न मालूम कहाँ का उत्साह आ गया। उनकी आदत छह, साढे छह बजे के बाद उठने की थी। लेकिन वह उसी दिन से अपनी दिनचर्या को बदलती है। अपने पुत्र में शकलदीप बाबू भावी अफसर देखते हैं तो उसपर उनका वात्सल्य भाव और अधिक उमडता है। बेटे की अच्छे भोजन का इन्तजाम करने लगा, पहले वह नारायण के धूम्रपान के सख्त खिलाफ रहे थे लेकिन अब सिगरेट की भी व्यवस्था करने लगी। रोज सायंकाल घर से लगभग एक मील की दूरी पर स्थित शिवजी के मन्दिर में भी जाने लगे थे। वे डिप्टी कलक्टरी के इम्निहान की तैयारी में लगे अपने बेटे को हर तरह से सहयोग देने क कोशिश कर रहे हैं। कचहरी से आने के बाद वह नारायण के कमरे को झाडते-बुहारते, उसका बिछौना लगाते, मेज-कुर्सियाँ सजाते और अंत में नाश्ता करके मन्दिर केलिए खाना हो जाते। मन्दिर में एक-डेढ घंटे तक रहते और लगभग दस बजे घर आते। पहले उन्हें नारायण के धूम्रपान से सख्त चिढ रही है और अब चुपके से सिगरेट की पैकेट भी उसके टेबल पर रख दिया करते है।

बच्चों को उसके कमरे के आसपास भटकने नही देते। उसके लिए मेवा, मलाई लाकर चुपके से पत्नी को इस हिदायत के साथ देते कि किसी और को न दे।

प्र) हिंदी कहानी में दलित विमर्श पर टिप्पणी लिखिए।

प्र) हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श पर टिप्पणी लिखिए।

प्र) हिंदी कहानी साहित्य में परिस्थिति विमर्श पर टिप्पणी लिखिए।

Essay questions (15 marks)

प्र) पाजेब के खो जाने के बाद पिता के व्यवहार में आये परिवर्तन को रेखांकित कीजिए।

उ) (कथावस्तु पढिए)

प्र) 'नेलकटर' संबन्धों में संवेदना तलाशने की प्रतीकात्मक कहानी है। स्पष्ट कीजिए?

उ) (कथावस्तु पढिए)

प्र) 'दूध का दाम' कहानी का सारांश लिखिए।

उ) (कथावस्तु पढिए)

प्र) 'परदा जिस भावना का अवलम्ब था वह मर चुकी थी'। स्पष्ट कीजिए।

उ) (कथावस्तु पढिए)

प्र) 'पिता' कहानी का सारांश लिखकर शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उ) (कथावस्तु पढिए)

प्र) 'डिप्टी कलक्टरी' निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सपनों और उम्मीदों की कहानी है। इस कथन पर विचार कीजिए।

उ) (कथावस्तु पढिए)

प्र) हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास पर लेख लिखिए।

प्र) हिंदी कहानी साहित्य की अद्यतन प्रवृत्तियों पर परिचय दीजिए।

प्र) हिंदी उपन्यास का उद्‌भव और विकास पर लेख लिखिए।

प्र) ग्लोबल गाँव के देवता में चित्रित नारी शोषण पर विचार कीजिए।

प्र) भूमंडलीकरण के संदर्भ में 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

****